www.anokhateer.com anokhateer@gmail.com पंजीयन क्रमांक-एमपीएचआईएन 69306/1998

दैनिक
अनोखा तीर
हरदा एवं नर्मदापुरम से एक साथ प्रकाशित
निशाने पर हर खबर

मौसम
अधिकतम - 32°c
न्यूनतम - 26°c

20 जुलाई 2022
हरदा, बुधवार
वर्ष-12, अंक- 45, पृष्ठ-8
मूल्य- 2 रुपए
श्रावण कृष्ण 7
विक्रम संवत् 2079

भोपाल-नागपुर हाईवे दो दिन में दूसरी बार बंद

सुखतवा पुल पर पानी खंडवा में खेत डूबे

अनोखा तीर, भोपाल ।

मध्यप्रदेश में हो रही भारी बारिश से नर्मदा, ताप्ती, बेतवा, शिप्रा सहित कई नदियां उफान पर हैं। छोटी नदियां और नाले भी चढ़े हुए हैं। नदी के निचले इलाकों में बाढ़ के हालात हैं। भोपाल-नागपुर हाईवे दो दिन में दूसरी बार सुखतवा पुल पर पानी आने से बंद हो गया। सोमवार को भी सुखतवा नदी की बाढ़ में अस्थाई पुल का कोना बह गया था। इस वजह से भोपाल-नागपुर हाईवे 11 घंटे बंद रहा था। खंडवा में आबना नदी में उफान आने से किशोर कुमार समाधि स्थल और इंदौर रोड तक पानी आ गया। नदी किनारे के खेत डूब गए। मौसम को देखते हुए खंडवा प्रशासन ने मंगलवार को स्कूलों में क्लास 1 से 8वीं तक के बच्चों की छुट्टी घोषित कर दी। नर्मदापुरम जिले में तवा बांध के गेट खुलने से खंडवा में इंदिरा सागर बांध का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। इंदिरा सागर के गेट खुलने की संभावना है, इससे पहले ओंकारेश्वर डैम से एक-दो दिन में पानी छोड़ा जाएगा। तवा डैम से छोड़ा जा रहा पानी 32 किलोमीटर आगे नर्मदापुरम शहर के पास बांद्राभान में नर्मदा नदी में मिलता है। इससे हरदा, देवास, सीहोर, खरगोन, बड़वानी के नदी किनारे बसे गांवों में बाढ़ का खतरा है। खरगोन में कुंदा और वेदा नदी उफना गई हैं। झिरन्या इलाके में वेदा नदी पर बने अपरवेदा बांध के गेट खोलना पड़ गए।

24 घंटे में बारिश

पिछले 24 घंटे के दौरान खंडवा में सबसे ज्यादा 3 इंच पानी गिरा। धार, इंदौर, नर्मदापुरम और खरगोन में 2-2 इंच बारिश हुई। उज्जैन में 1.5 इंच, रतलाम और रायसेन में 1-1 इंच, भोपाल, छिंदवाड़ा में आधा-आधा इंच पानी गिरा। पचमढ़ी, बैतूल, मंडला, सिवनी, मलाजखंड, गुना, ग्वालियर और जबलपुर में भी बारिश हुई।

निवाड़ी में अति भारी बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे में भोपाल, रायसेन, राजगढ़, विदिशा, सीहोर, बुरहानपुर, खंडवा, अशोकनगर, गुना, ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया, भिंड, मुरैना, श्योपुर कलां, छिंदवाड़ा, बालाघाट, सिवनी, मंडला, नरसिंहपुर, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़, सागर और छतरपुर में गरज-चमक के साथ बारिश का पूर्वानुमान जताया है। धार, इंदौर, देवास, आगर-मालवा, शाजापुर, उज्जैन में भारी और निवाड़ी में अति भारी बारिश हो सकती है।

भोपाल के बड़े तालाब का जलस्तर 1664.85 फीट तक पहुंचा - लगातार बारिश से भोपाल के बड़े तालाब का जलस्तर 1664.85 फीट तक पहुंच गया। तालाब का फुल टैंक लेवल 1666.80 है।

जिला सहकारी बैंक नर्मदापुरम के सीईओ आरके दुबे निलंबित

- करोड़ों के गबन घोटाले के लगते रहे आरोप, राजनीतिक संरक्षण के चलते डुबा दी बैंक

अनोखा तीर, हरदा।

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित नर्मदापुरम- हरदा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आरके दुबे को फिर निलंबित कर दिया गया। वैसे राजनीतिक संरक्षण के चलते श्री दुबे के लिए निलंबन कोई सजा या चिंता का विषय नहीं है। वह तो पहले भी अपेक्स बैंक से बर्खास्त होने के बाद लंबे समय जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित नर्मदापुरम में अपना संविलियन करवा कर करोड़ों के वारे न्यारे करते रहें। अनेक प्रकार की जांचों में वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कई बार दोषी करार दिए जाने के बाद भी उनका कुछ नहीं बिगड़ा। यहां तक कि न्यायालय उनके भ्रष्ट कारनामों पर सख्त टिप्पणी करते हुए विभागीय कार्यवाही के लिए भी बोल चुका है। लेकिन श्री दुबे की राजनीतिक पहुंच पकड़ इतनी तगड़ी है कि जिस अपेक्स बैंक ने उन्हें भ्रष्टाचार के मामलों में सेवा से बर्खास्त किया था उसी अपेक्स बैंक ने उन्हें पुनः अपना कैडर अधिकारी नियुक्त कर दिया। बैंक की हरदा शाखा से लगभग तीन करोड़ के नगद गबन मामले में जेल की सजा काटने के बाद भी पुनः बहाल होकर उसी बैंक में पदस्थ हो गए। अब अपेक्स बैंक के कैडर अधिकारी के तौर पर जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित नर्मदा पुरम हरदा में वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों की अवहेलना करते हुए अपनी भ्रष्ट कार्यप्रणाली को अंजाम देते रहे। जिसके चलते आज बैंक की स्थिति यह है कि उसकी शाखाओं में जमाकर्ताओं को अपनी राशि निकालने में परेशानी आ रही है। बैंक के खाता धारक एक साथ 50000 का भुगतान भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। फसल ऋणमाफी घोटाले और गेहूं चना खरीदी में भारी भ्रष्टाचार के चलते प्रदेश की पूर्व सरकार में सहकारिता मंत्री रहे गौरीशंकर बिसेन ने सार्वजनिक मंच से उनके निलंबन और बैंक से हटाए जाने की घोषणा की थी, उसके बावजूद वह बैंक में बने रहे। विधानसभा में सत्ता पक्ष के विधायक और वर्तमान मंत्री कमल पटेल ने भी कई बार प्रश्न उठाए थे। विधानसभा में सहकारिता मंत्री के आश्वासन के बावजूद श्री दुबे के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हो पाई। चूंकि प्रतिवर्ष गेहूं चना के समर्थन मूल्य खरीदी दौरान गोलमाल करके श्री दुबे अपने राजनीतिक आकाओं को भारी चढ़ौतरी करते रहें। यही कारण है कि जो लोग श्री दुबे का सार्वजनिक तौर पर विरोध करते हैं, वहीं अंदरूनी तौर पर उनका समर्थन करते रहें। खैर, फिलहाल तो आरके दुबे को अपेक्स बैंक में अपने 8 बिंदु के आरोप पत्र के साथ निलंबित करते हुए वर्तमान मुख्यालय ग्वालियर कर दिया है। निलंबन पत्र में आत्मनिर्भर भारत योजना में शून्य प्रतिशत प्रगति, ऋण वसूली को पूरा नहीं करना, विपणन संघ को खाद की राशि का 67 करोड़ रुपए भुगतान नहीं करने के आरोप लगाए गए हैं। इसी तरह धान उपार्जन में वर्ष 2021-22 के नर्मदापुरम व हरदा के 28 करोड़ के देयक प्रस्तुत नहीं करने तथा गेहूं चना खरीदी में नर्मदापुरम के 83 करोड़ तथा हरदा के 49 करोड़ के देयक प्रस्तुत नहीं करने संबंधित विषय को लेकर निलंबित किया गया है। वैसे श्री दुबे का यह निलंबन कितने दिन बरकरार रहेगा, यह कह पाना उनकी राजनीतिक पकड़ को देखते हुए उचित नहीं है। चूंकि सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को कोई भी हलाल नहीं करना चाहता। देखने वाली बात यह भी है कि अपेक्स बैंक ने आरके दुबे को निलंबित कर एसके कनोजिया को यहां नियुक्त किया है। लेकिन श्री कनोजिया ने इस बैंक में ज्वाईनिंग करने की जगह 6 अगस्त तक का अवकाश ले लिया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि श्री दुबे को यह मालूम है कि वह 6 अगस्त से पहले भेंट पूजा के माध्यम से अपना निलंबन खत्म करवाकर पुनः इस बैंक में पदस्थ हो जाएंगे।

सीएम ने 12 नंबर मल्टी क्षेत्र में की चाय पर चर्चा

जनता को सुशासन और सुरक्षा देना राज्य सरकार का कर्तव्य : मुख्यमंत्री चौहान

- पात्र व्यक्ति को योजना का लाभ दिलाने शुरू किया अभियान

अनोखा तीर, भोपाल । मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जनता परेशान हो, तो सरकार का मतलब क्या है। जनता को सुशासन और सुरक्षा देना राज्य सरकार का कर्तव्य है। प्रत्येक पात्र व्यक्ति को हर योजना का लाभ मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए आज से प्रदेश में अभियान आरंभ किया जा रहा है। हमारी सरकार जनता की जिंदगी बदलने के लिए प्रतिबद्ध है। समाज के सभी वर्गों की बेहतरी के लिए राज्य सरकार कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री श्री चौहान भोपाल में 12 नंबर बस स्टॉप के पास स्थित मल्टी क्षेत्र में 'चाय पर चर्चा कार्यक्रम' में स्थानीय रहवासियों से रू-ब-रू हुए। श्री चौहान ने लाड़ली लक्ष्मी, आयुष्मान भारत, स्व-निधि, संबल और सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किए। श्री चौहान ने कन्या-पूजन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने स्थानीय रहवासियों के साथ चाय और अल्पाहार ग्रहण किया।

मनरेगा में काम मशीन से होता है और बाद में भरते हैं मस्टर रोल

- अग्रवाल ने खोली पोल, गुप्ता ने लगाई फटकार

गणेश पांडे, भोपाल।

जंगल महकमे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने मनरेगा के तहत दूसरे विभागों द्वारा कराए जाने वाले कामों की पोल खोल दी। दूसरे विभाग मशीन से काम कर आते हैं और मस्टर रोल भर देते हैं। जब वे यह बात बोल रहे थे, तब उनकी बातें वन मंत्री विजय शाह भी सुन रहे थे। उनकी पोलखोल बोल पर वन बल प्रमुख आरके गुप्ता ने फटकार लगाई कि इस प्लेटफार्म पर ऐसी बातें न करें। यह वाकिया पिछली वीडियो कांफ्रेंसिंग की है। इस वीडियो कांफ्रेंसिंग में वन मंत्री विजय शाह, वन बल प्रमुख आरके गुप्ता मुख्यालय में पदस्थ सभी पीसीसीएफ-एपीपीसीएफ और फील्ड के समस्त अफसर जुड़े थे। वीडियो कांफ्रेंसिंग में मनरेगा के बजट खर्च करने के मुद्दे पर चर्चा चल रही थी। चर्चा में यह बात सामने आई कि वन मंडलों में मनरेगा के बजट खर्च नहीं हो पा रहा है। इसके तहत होने वाले कार्य भी वन मंडलों में धीमी गति से हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में सवाल उठा कि दूसरे विभाग मनरेगा बजट कैसे खर्च करते हैं..? इस सवाल का जवाब अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक और पदेन वन संरक्षक उज्जैन मनोज अग्रवाल ने दिया। अग्रवाल ने बताया कि दूसरे विभाग मनरेगा के काम मशीन से कराते हैं और बाद में मस्टर रोल बनते हैं। उनके इस जवाब का यह आशय निकाला जा रहा है कि दूसरे विभाग मस्टर रोल फर्जी तरीके से भरते हैं। यही वजह रही कि अग्रवाल के जवाब का भावार्थ समझते ही वन बल प्रमुख गुप्ता ने नाराजगी जताते हुए अग्रवाल से प्रति प्रश्न किया कि क्या इस तरीके की बातें करने के लिए यह प्लेटफार्म है?

फाईल फोटो

आपको बोलने का हक नहीं है....

वीडियो कांफ्रेंसिंग में एक और दिलचस्प घटना घटी। पन्ना नेशनल पार्क के डायरेक्टर उत्तम शर्मा ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान वन मंत्री विजय शाह और वन बल प्रमुख आरके गुप्ता का ध्यान आकृष्ट कराया कि केंद्र सरकार भारतीय वन अधिनियम की धारा 26 (1) की तीन उप धाराओं और संरक्षित वन अधिनियमों में संशोधन करने जा रही है। केंद्र सरकार ने आम जनता से 31 जुलाई तक सुझाव मांगे गए हैं। उत्तम शर्मा ने अपने सुझाव में यह आग्रह किया कि वन विभाग संगठित अपराध की घटनाओं में सजा का प्रावधान बढ़ाए जाने का सुझाव केंद्र को भेजा जाए। उनके इस सुझाव पर वन मंत्री शाह और डीजी फॉरेस्ट गुप्ता अपनी प्रतिक्र या व्यक्त करते, इससे पहले पदेन वन संरक्षक उज्जैन मनोज अग्रवाल ने शर्मा को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि आपको फील्ड का अनुभव ही नहीं है तो सुझाव क्यों दे रहे हो। यही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि वाइल्ड लाइफ में पदस्थ हो, वहां के सुझाव दीजिए। इस संबंध में पन्ना फील्ड डायरेक्टर उत्तम शर्मा का कहना है कि सीनियर अफसर हैं, उनकी बात का बुरा नहीं मानना चाहिए। शर्मा ने यह भी बताया कि वर्ष 2004 से 2013 तक फील्ड का अनुभव रहा है। यही नहीं, प्रदेश के सबसे संवेदनशील वन मंडल बुरहानपुर में अग्रवाल से ज्यादा 4 साल तक रहा हूं।

न्यूज ट्रेक

नाले की सफाई नहीं होने से घरों में भरा रहा पानी

अनोखा तीर, हंडिया। हंडिया के बीच गांव में स्थित मस्जिद के पास एक नाला बना हुआ है, जिसमें झाड़ियां होने की वजह से बारिश का पानी रुक जाता है। इसकी साफ सफाई कराने के लिए कलेक्टर द्वारा निर्देश दिए गए थे। जिसका पालन आज तक नहीं हो सका है। जिसके कारण लोगों के घरों

में पानी भरा रहा है। इस संबंध में सचिव कैलाश योगी ने बताया कि अभी बारिश का समय चल रहा है जिससे सफाई कर्मचारी नहीं मिल रहे हैं। जैसे ही मौसम साफ होगा नाले की सफाई करा दी जाएगी। उन्होंने कहा कि बारिश के कारण यहां कोई भी मजदूर काम करने को तैयार नहीं है। जैसे ही मजदूर मिलेंगे नाले का सफाई कार्य करा दिया जाएगा।

हैंडपंप का सुधार कराने की मांग

अनोखा तीर, हंडिया। नगर के रिद्धनाथ मंदिर के ठीक सामने नेशनल हाईवे के समीप बसोड़ मोहल्ले में लगा हैंडपंप पिछले 1 हफ्ते से बंद पड़ा है। जिसकी वजह से लोगों को पीने के पानी के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

ज्ञात हो कि बारिश के चलते नर्मदा नदी में भी उफान आ रही है। जिसकी वजह से नर्मदा का जल भी स्वच्छ नहीं बचा है। ऐसे में यहां के वाशिंदों को पीने के पानी के लिए अपने मोहल्ले से दूर हाईवे पार करके रिद्धनाथ मंदिर परिसर में लगे हैंडपंप पर जाना पड़ता है। ग्राम के लोगों ने पीएचई विभाग से हैंडपंप को दुरुस्त कराने की मांग की है।

किसानों को वितरित किए सागौन के पौधे

अनोखा तीर, खिरकिया। भविष्य निधि अभियान के तहत ग्राम सारंगपुर में पर्यावरणविद गौरीशंकर मुकाती के मार्गदर्शन में रुपई एग्रो कंपनी के सौजन्य से 28 हजार सागौन के पौधे की खेप पहुंची। सारंगपुर परिक्षेत्र से

आसपास के चौकड़ी, पहनपाट, देवपुर, बमहंगांव, बारंगा में पौधे वितरित किए गए। परियोजना विस्तारक मुकेश गुर्जर के प्रयास से क्षेत्र में लगातार वृक्षारोपण किया जा रहा है। इस दौरान जन प्रतिनिधि ललित सारण, जन अभियान परिषद के ऋषि विश्नोई, प्रेरक दीपेंद्र पीपारदे, आनंद गौर, सुभाष सारण, निकेश महाजन, भरत गौर, अभिमन्यु ठाकुर, श्रीकिशन भाटी, मथुरा प्रसाद भाटी नरेंद्र सारण आदि मौजूद रहे।

राधेश्याम मालवीय का निधन

अनोखा तीर, रहटगांव। ग्राम के राधेश्याम मालवीय का 80 वर्ष की आयु में सोमवार शाम को निधन हो गया, जिनका अंतिम संस्कार मंगलवार सुबह स्थानीय मुक्तिधाम में किया गया। जहां बड़ी संख्या में सामाजिक बंधुओं के अलावा ग्रामीणों ने पहुंचकर मृत आत्मा की शांति की प्रार्थना की। मृतक श्री मालवीय के दो पुत्र हैं रामकृष्ण एवं अशोक मालवीय। जानकारी के मुताबिक ग्राम में किसी भी प्रकार का धार्मिक आयोजन बगैर राधेश्याम दादा के संभव नहीं होता था। चूंकि राधेश्याम दादा हमेशा से ही ऐसे आयोजन में शामिल होते रहे हैं। वह चाहे ग्राम में भुजरिया, रनुबाई या डोल ग्यारस का कार्यक्रम ही क्यों न हो। वह धार्मिक कार्यक्रम में सबसे आगे रहते थे और खासकर महिला मंडल को साथ लेकर चलते थे।

एसडीएम ने किया निरीक्षण

बचाव के लिए नर्मदा घाट पर तैनात हैं होमगार्ड के जवान

अनोखा तीर, हंडिया।

क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश के कारण नर्मदा नदी का जलस्तर बढ़ने से सुरक्षा के लिए जिला कलेक्टर के निर्देशन में होमगार्ड के 10 जवान नर्मदा घाट पर तैनात हैं। यह सभी होमगार्ड एवं पुलिस के जवान हंडिया के प्रमुख घाट रघुनाथ मंदिर और खेड़ी घाट के अलावा सड़क घाट पर भी निगरानी बनाए हुए हैं। क्योंकि बारिश के समय घाटों पर गहरा पानी होने की वजह से कोई भी श्रद्धालु अप्रिय घटना का शिकार ना हो इसके लिए सुरक्षा के इंतजाम किए गए हैं। वहीं होमगार्ड के सभी जवान लाइफ जैकेट पहने हुए घाट पर तैनात रहते हैं। मंगलवार दोपहर लगभग 3 बजे अपर कलेक्टर जेपी संयम, एसडीएम श्रुति अग्रवाल एवं तहसीलदार शिवदत्त कटारे ने मौके का निरीक्षण किया। जहां तैनात होमगार्ड के जवानों को निर्देश दिए कि सुरक्षा में किसी प्रकार की लापरवाही ना बरतें। ड्यूटी पर तैनात लांसनायक विनोद अवस्थी, दीपक देवेंद्र राठौर, अशोक नागले, सत्येंद्र शर्मा, रामदेव डोंगरे, हरिभजन चौहान,

छगन बिल्ले, राकेश भंवरे, शिवम परिहार, सुनील बिलोरे, मुकेश यादव, कैलाश बघेला, बसंत सोलंकी को घाट पर हर समय पैनी नजर बनाए रखने के निर्देश दिए। ताकि यहां आने वाले श्रद्धालुओं को गहरे पानी में जाने से पहले सावधान किया जा सके। होमगार्ड के जवान तीनों प्रमुख घाटों पर ड्यूटी करते दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि पिछले 3 दिनों से नर्मदा नदी का जलस्तर उतार-चढ़ाव की स्थिति में बना हुआ है।

स्टेरिंग फेल होने से खेत में जा घुसी बस

अनोखा तीर, मसनगांव। हरदा से सिराली की ओर जा रही निजी कंपनी की बस का स्टेरिंग फेल होने से बस खेत में जा घुसी। जिससे कोई जनहानि तो नहीं हुई, लेकिन बस के खेत में उतरने से सवारियों में घबराहट

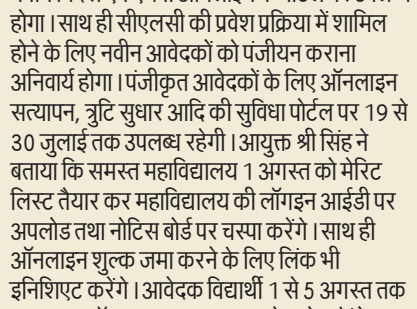

बनी रही। सभी सवारियों को उतारकर दूसरी बस से अपने गंतव्य तक पहुंचाया गया। बस चालक ने बतलाया कि स्टेरिंग फेल होने के कारण बस अनियंत्रित होकर खेत में उतर गई। जहां पर मिट्टी एवं दलदल होने से खेत में जाकर बस के चक्के फस गए, जिससे किसी को भी कोई चोट नहीं लगी। न ही कोई हताहत हुआ।

सीएलसी के आवेदन 30 तक होंगे जमा

अनोखा तीर, हरदा। प्रदेश के महाविद्यालयों में कॉलेज लेवल काउंसलिंग के चौथे चरण के लिए विद्यार्थी 19 से 30 जुलाई तक एक से अधिक महाविद्यालय में आवेदन जमा कर सकते हैं। आवेदन के साथ कोई भी दस्तावेज संलग्न करना नहीं होंगे। आयुक्त उच्च शिक्षा दीपक सिंह ने बताया कि आवेदक विद्यार्थियों को सीएलसी चौथे चरण के लिए आवेदन का प्रारूप उच्च शिक्षा विभाग के नवीन निर्देश एवं एमपी ऑनलाइन के पोर्टल पर उपलब्ध होगा। साथ ही सीएलसी की प्रवेश प्रक्रिया में शामिल होने के लिए नवीन आवेदकों को पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। पंजीकृत आवेदकों के लिए ऑनलाइन सत्यापन, त्रुटि सुधार आदि की सुविधा पोर्टल पर 19 से 30 जुलाई तक उपलब्ध रहेगी। आयुक्त श्री सिंह ने बताया कि समस्त महाविद्यालय 1 अगस्त को मेरिट लिस्ट तैयार कर महाविद्यालय की लॉगइन आईडी पर अपलोड तथा नोटिस बोर्ड पर चस्पा करेंगे। साथ ही ऑनलाइन शुल्क जमा करने के लिए लिंक भी इनिशिएट करेंगे। आवेदक विद्यार्थी 1 से 5 अगस्त तक शुल्क का ऑनलाइन भुगतान कर प्रवेश ले सकेंगे। उन्होंने सभी महाविद्यालयों को निर्धारित तिथि तक ऑनलाइन पंजीकृत विद्यार्थियों से निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्राप्त करने की कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

गलने लगी फसल

● लगातार बारिश ने बढ़ा दी किसानो की चिंता

अनोखा तीर, मसनगांव।

जुलाई माह में शुरू हुआ बारिश का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। रविवार रात से शुरू हुई बारिश मंगलवार के दिन भी अनवरत जारी रही। लगातार बारिश होने से फसलों को नुकसान पहुंचने लगा है। 1 माह की फसल होने के बावजूद किसान खेतों में दवाइयों का स्प्रे नहीं कर पा रहे हैं। जिससे फसलों में बीमारियां तो लग ही रही हैं। बारिश के कारण पौधे भी गलने लगे हैं। किसानों का कहना है कि अनवरत बारिश फसल के लिए नुकसानदायक होती है। ऐसे में तलाई वाले खेतों की फसल पूरी तरह खराब हो जाती है। विगत 15 दिनों से हो रही बारिश के कारण जहां फसलों का उठाव कमजोर बना हुआ है, वहीं निचले क्षेत्रों में फसल खराब हो चुकी है। जहां अच्छी फसल भी लगी हुई है वहां पर भी नुकसान पहुंचने की आशंका बढ़ गई है। जिससे किसानों को फसल के उत्पादन की

चिंता सताने लगी है।

तीसरी बार बोई फसल भी हुई खराब- लगातार बारिश होने से क्षेत्र में कई गांव में खेत खाली पड़े हुए हैं, जहां खरीफ फसल की बुवाई नहीं हो सकी है। कुछ वर्ष पहले भी इसी प्रकार की स्थिति बनने से खेतों में फसल की बोनी नहीं हो सकी थी। वहीं इस साल फिर से उसी प्रकार की स्थिति बन गई है। जिन किसानों की फसल खराब हो गई थी उनके द्वारा दो से तीन बार बुवाई कर दी गई। परंतु बारिश के कारण फसल उगने से पहले ही खराब हो गई जिससे खेत खाली पड़े हुए हैं।

सताने लगी नुकसान की आशंका

खरीफ फसलों के अनुकूल मौसम न होने से किसानों को उत्पादन की चिंता सताने लगी है। ग्राम के किसान हरनारायण छलोत्रे ने बताया कि खेतों में 8000 से लेकर 10 हजार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बीज लेकर खेतों की बुवाई करने के बाद लगातार बारिश से फसलों को नुकसान पहुंच रहा है। यदि मौसम में बदलाव नहीं हुआ तो सीजन की मुख्य फसल सोयाबीन खराब हो सकती है। जिसके कारण किसानों को लाखों रुपए का नुकसान हो जाएगा। पिछले वर्ष अच्छा उत्पादन तथा मंडियों में बाजिव दाम मिलने से किसानों को सोयाबीन की फसल से फायदा मिला था। इस बार भी उसी उम्मींद से क्षेत्र के किसानों ने सोयाबीन की फसल लगाई है। लेकिन मौसम विपरीत होने से फसल को नुकसान पहुंचने के कारण उत्पादन प्रभावित होने की आशंका बढ़ गई है, जो किसानों को नुकसान पहुंचा सकती है।

हितग्राहियों ने कहा...

बारिश के बाद ही शुरू होगा निर्माण कार्य

● ग्राम पंचायत ने आवास निर्माण का कार्य शुरू करने थमाए नोटिस

अनोखा तीर, सोडलपुर।

ग्राम पंचायत के 20 वार्डों में लगभग 115 हितग्राहियों को प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत आवास निर्माण की राशि हितग्राहियों के खातों में डाल दी गई है। का कार्य शुरू कर दिया, लेकिन 35 परिवार ऐसे हैं, जो बारिश के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं सके। क्योंकि यह सभी परिवार वार्ड क्र. 7-8-9- 10 के आसपास रहते हैं। जहां से खाली नाला बहता हैं।

ऐसे में नाले के पास बसे होने के कारण

यह राशि बारिश के मौसम में हितग्राहियों के खातों में डाली गई। ऐसे में लगभग 80 परिवारों ने तो आनन-फानन में आवास निर्माण मकान निर्माण की सामग्री बहने का डर बना रहता है। जिससे उनका आवास निर्माण का सपना अधूरा रह सकता है।

हितग्राहियों को थमाए नोटिस

एक ओर लगातार बारिश की मार झेल रहे परिवार आवास निर्माण का कार्य शुरू नहीं कर पा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जिन हितग्राहियों ने काम शुरू नहीं किया है उन्हें ग्राम पंचायत नोटिस थमा रही है। जिसके चलते उक्त परिवार दोहरी मार झेल रहे हैं। एक ओर बारिश का दंश और दूसरी और काम शुरू करने की चेतावनी। मंगलवार को उक्त परिवारों ने टिमरनी जनपद पंचायत कार्यालय पहुंचकर सीईओ अशोक उईके से चर्चा कर अपनी समस्याएं बताते हुए कहा कि बारिश थमते ही हम आवास निर्माण का कार्य शुरू कर देंगे। हितग्राही उमाशंकर दर्जी, महेश गोस्वामी, राकेश नामदेव, अरविंद राजवैद्य, जगदीश भाटी ने कहा कि हम लोगों के पास रहने तक की जगह नहीं है। ऐसे में यदि मकान खोल देंगे तो हम रहेंगे कहां। साथ ही बारिश होने से मटेरियल रखने की जगह भी नहीं है। ऐसे में हम अभी निर्माण शुरू नहीं कर पाएंगे। ग्राम पंचायत के द्वारा हमें नोटिस देकर दबाव बनाया जा रहा है और जल्द काम शुरू करने की हिदायत दी जा रही है। लेकिन बारिश के कारण हम सभी परिवार आवास निर्माण का कार्य शुरू नहीं कर पाएंगे। लगभग 1 से डेढ़ माह बाद ही काम शुरू होगा। ऐसे में जनपद सीईओ उईके ने कहा कि आप लोग खातों से राशि न निकाले। जब भी कार्य शुरू करें तभी राशि निकाले। पंचायत सचिव रामपाल सोलंकी ने बताया कि ग्राम पंचायत में लगभग 115 प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत हुए हैं। जिसमें से लगभग 80 परिवारों ने काम शुरू कर दिया है। अभी 35 परिवार ऐसे हैं, जिन्होंने अभी तक काम शुरू नहीं किया है। लगातार जनपद और जिला पंचायत से काम शुरू करने के आदेश दिए जा रहे हैं। लेकिन हितग्राही काम शुरू नहीं कर रहा है। जिसके चलते उन परिवारों को नोटिस जारी कर जल्द काम शुरू करने के लिए कहा गया है।

पुलिस ने अंधेकत्ल का किया पर्दाफाश

4 आरोपी गिरफ्तार

● पारिवारिक विवाद में पुरानी रंजिश के चलते की हत्या,

अनोखा तीर, खरगोन। 15 जुलाई 2022 को थाना बरुड पर खरगोन जुलवानिया मार्ग हनुमान मंदिर के पास एक व्यक्ति का शव पड़ा है और पास में एक मोटरसायकल खड़ी होने की सूचना प्राप्त हुई थी। सूचना के बाद पुलिस टीम को तत्काल मौके पर रवाना किया गया। पुलिस टीम द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण किया तो खरगोन जुलवानिया मार्ग हनुमान मंदिर के पास एक व्यक्ति का शव पड़ा हुआ था। जिसके सिर व चेहरे पर गंभीर चोट लगी थी और खून लगा हुआ था। शव से थोड़ी दूरी पर एक बजाज कंपनी की प्लेटिना मोटर सायकल खड़ी थी। मृतक के जेब की तलाश लेते उसके जेब से पर्स मिला, जिसमें से उसकी पहचान पत्र के आधार पर शव की पहचान सतिश पिता नाथूलाल जायसवाल उम्र 41 वर्ष निवासी अवरकच्छ थाना मेनगांव तथा मोटरसायकल भी मृतक सतिश की होना पाई गई। सूचना पर से थाना बरुड पर मर्ग क्रमांक 27/22 पंजीबद्ध कर जांच में लिया गया। घटनास्थल

तथा शव का सूक्ष्मता से निरीक्षण करने पर पाया कि मृतक सतीश के सिर एवं चेहरे पर गहरी चोटें लगी थी। कपड़ों व हाथों पर भी खून लगा था। मौके पर ही एफएसएल खरगोन के वैज्ञानिक अधिकारी सुनील मकवाना द्वारा भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण से मृत्यु संदिग्ध परिस्थितियों से होना प्रतीत हो रही थी। जिस पर से अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध थाना बरुड पर अपराध क्रमांक 193/22 धारा 302 भदवि का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह के निर्देशन में एएसपी ग्रामीण जितेन्द्र सिंह पंवार, एएसपी शहर मनीष खत्री एवं एसडीओपी राकेश मोहन शुक्ल के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी बरुड गेहलोद सेमलिया के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर हत्या के आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी कर प्रकरण का खुलासा करने करने के लिए निर्देशित किया गया। गठित पुलिस टीम ने मृतक के गांव एवं घटनास्थल के आसपास के मुखबिरों को सक्रिय कर हत्या की घटना के बारे जानकारी जुटाने के लिए लगाया। परिणामस्वरूप मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि मृतक का अपनी पत्नी एवं ससुराल पक्ष से बार-बार विवाद होता था। जिसके चलते मृतक एवं उसकी पत्नी में अनबन होते रहती थी। मुखबिर ने यह भी बताया कि मृतक की पत्नी द्वारा करीब एक-डेढ़ साल पहले भी पति से विवाद के चलते कोई जहरीली पदार्थ पी चुकी है। पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की बताई जानकारी अनुसार इस दिशा मे विवेचना की गई। जिसमें पाया कि मृतक का साला आदर्श जिससे भी मृतक का पूर्व में विवाद हो चुका है। आदर्श को पूछताछ के लिए थाने बुलाया गया। जिससे पुलिस ने बारीकी से पूछताछ की तो आदर्श ने अपने जीजा की हत्या अपने दो अन्य दोस्तों के साथ मिलकर अपनी बहन के कहने पर करना स्वीकार किया।

इन आरोपियों को किया गिरफ्तार- पुलिस द्वारा हत्या के गिरफ्तार चार आरोपियों में बबीता पति सतीश जाति कलाल जयसवाल उम्र-38 वर्ष निवासी अवरकच्छ थाना मेनगाँव, आदर्श पिता संतोष जाति कलाल जयसवाल 21 वर्ष निवासी पिपलझोपा थाना भगवानपुरा, जितेन्द्र पिता इंदरमल जाति कलाल जयसवाल 23 वर्ष निवासी ग्राम पिपलझोपा थाना भगवानपुरा, जयप्रकाश पिता राजेन्द्र जाति बारेला सोलंकी 20 वर्ष निवासी पिपलझोपा थाना भगवानपुरा को गिरफ्तार किया है।

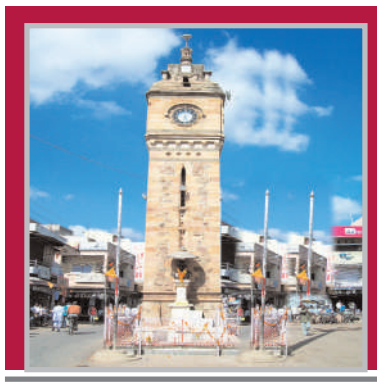

हरदा नगर

हरदा, बुधवार, 20 जुलाई 2022

कोगा बने कार्यकारी अध्यक्ष

अनोखा तीर, हरदा। मध्यप्रदेश बलाई समाज महासंघ के युवा प्रभारी प्रवीण राणे, प्रदेश महासचिव अजय ओनकर, हरदा जिलाध्यक्ष कैलाश हीरे, युवा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष भागवत दाखले की सहमति से अक्षय कोगा को जिला कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। कोगा की इस नियुक्ति से सामाजिकजनों में हर्ष है। कोगा को उनके स्नेहीजनों एवं इष्ट मित्रों ने शुभकामनाएं दी है।

आप जो यह तस्वीर देख रहे हैं, वह शहर के नई सब्जी मंडी चौराहें की है। जहां एक स्थान पर लगने वाले वाहनों के झमेले से अभी निजात मिला ही नही था कि एक ओर स्थान को वाहनों की स्थायी पार्किंग में तब्दील कर दिया है। जिससे शहर के आंतरिक मार्ग नही, बल्कि मुख्य मार्ग पर आवागमन बाधित होगा। हालांकि जिस नई जगह पर वाहन खड़े होना शुरू हुए हैं, वहां चौराहें पर काफी चौड़ाई है। फिर भी, अव्यवस्था तो अव्यवस्था ही कहलाएगी। जिम्मेदार महकमों की लचर कार्यप्रणाली को लेकर लोग दबी जुबान में व्यवस्था को कोस रहे हैं। इस बारे में उनका कहना है कि सब्जी मंडी चौराहें के पास बैंक समेत अन्य दफतरों की वजह से पहले ही नियम तार-तार हो रहे हैं। उस पर वाहन पार्किंग का एक ओर नया झमेला लोगों की जानें कितनी समस्या बढ़ाएगा। यहां की बदहाल व्यवस्था को देखकर लोग कहना नही चूकते, कि यह बात गलत है।

सार समाचार

शत-प्रतिशत रहा दसवीं का परीक्षा परिणाम

अनोखा तीर, हरदा। विजन इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल हरदा नर्मदापुरम संभाग का आईसीएसई बोर्ड से मान्यता प्राप्त एक मात्र विद्यालय है। जिसका सत्र 2021-22 की कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विद्यालय की कक्षा दसवीं में अध्ययनरत छात्रा आरती आमे प्रथम, अनंत दुगाया द्वितीय एवं श्रुति खोदरे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों की सफलता पर विद्यालय संचालक डॉ.रामकिशोर दोगने द्वारा विद्यालय परिवार की ओर से विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

तौलकांटों का किया सुधार कार्य

अनोखा तीर, हरदा। कृषि उपज मंडी समिति टिमरनी में संचालित 50 टन एवं 30 टन के दो इलेक्ट्रिक तौल कांटे तकनीकी खराबी के कारण कई दिनों से बंद पड़े थे। वर्षा के कारण तौल कांटो की पिट में पानी भर जाने से कांटो के लोडसेल पर नमी मॉस्चर आ जाने से उपज के वास्तविक वजन में अंतर आ रहा था। जिसके कारण कांटे को कृषक हित में बंद करा दिया गया था। मंगलवार को श्रीराम धर्मकांटा टिमरनी के इंजीनियर द्वारा कांटे का मौका मुआयना कर लोड सेल बदले गए। टिमरनी मंडी प्रशासन ने किसान बंधुओं से अपनी उपज मंडी प्रांगण में विक्रय के लिए लाने का अनुरोध किया है।

पेंशनरो का विशाल धरना प्रदर्शन 21 को

अनोखा तीर, हरदा। मप्र शासन लगातार 2 वर्ष से अधिक समय से राज्य पेंशनरो की ज्वलंत मांगों का निराकरण नहीं करते हुए पेंशनरो को उपेक्षित कर रहा है। जैसे छठवे वेतनमान का 32 माह का एरियर्स, सातवे वेतनमान का 27 माह का एरियर, 31 प्रतिशत महंगाई भत्ता, केंद्र के समान 9 हजार रुपए चिकित्सा भत्ता, 50 हजार ऊपादान राशि, आयुष्मान योजना, छत्तीसगढ़

पुनर्गठन धारा 49 विलोपित करने, 79 वर्ष पूर्ण होने पर 20 प्रतिशत पेंशन वृद्धि, तथा कार्यरत कर्मचारियों को पुरानी पेंशन की बहाली नहीं होने से पेंशनरों में घोर असंतोष है। उक्त मांगों को लेकर प्रदेश के पेंशनर 21 जुलाई को भोपाल में लामबंद होकर जंगी धरना प्रदर्शन करेंगे। वहीं रैली निकालकर सड़कों पर विरोध प्रदर्शन करेंगे। इसमें हरदा जिले से भी पेंशनर हिस्सा लेंगे। यह निर्णय पेंशनर एसोसिएशन हरदा ने सर्वसम्मति से लिया।

छात्रवृत्ति आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई

अनोखा तीर, हरदा। महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के लिए पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई निर्धारित की गई है। जिला संयोजक सीपी सोनी ने बताया कि जिन विद्यार्थियों के द्वारा नवीन छात्रवृत्ति या नवीनीकरण के लिए आवेदन नहीं किए गए हैं, वे 29 जुलाई तक अपने आवेदन ऑनलाइन जमा करा सकते हैं। यह आवेदन एमपी टास पोर्टल व एनआईसी 2.0 पोर्टल पर जमा किए जा सकते हैं।

कैदियों को दी एचआईवी एड्स की जानकारी

अनोखा तीर, हरदा। मंगलवार को जिला जेल में सुविक्षा प्लस, एचआईवी एवं आपरेशन आशा के तहत टीबी शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में एचआईवी, एड्स, टीबी एवं यौन रोगों के संबंध एवं निदान के संबंध में विस्तृत जानकारी देकर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की गई। श्री शाकिर अली, पीपीएम द्वारा एचआईवी, आपरेशन आशा प्रबंधक कचन कुमार के द्वारा टीबी रोग एवं कम्यूनिटी हेल्थ रिसोर्स राजू कलम के द्वारा स्पूटम सेंपल कलेक्शन एवं ट्रांसपोर्टेशन के संबंध में बताया गया। जांच के दौरान किसी भी बंदी में उक्त रोगों के लक्षण नही पाए गए। कार्यक्रम में डॉ.महेन्द्र कुशवाहा व फार्मासिस्ट मनीष साध का विशेष सहयोग रहा। जेल अस्पताल को व्हाइट बोर्ड, डस्टर व मार्कर प्रदान किया गया। अंत में एमएस रावत जेल अधीक्षक ने सभी का आभार प्रकट किया।

उप सरपंच के निर्वाचन हेतु कार्यक्रम निर्धारित

- **हरदा में 24, टिमरनी में 25 व खिरकिया में 26 जुलाई को चुने जाएंगे उपसरपंच**

अनोखा तीर, हरदा।

जिले की ग्राम पंचायतों में उपसरपंच पद के निर्वाचन के लिए मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। जारी कार्यक्रम के अनुसार हरदा विकासखण्ड की ग्राम पंचायतों में उपसरपंच पद के निर्वाचन की कार्यवाही 24 जुलाई को, टिमरनी विकासखण्ड में 25 जुलाई तथा खिरकिया विकासखण्ड की पंचायतों में 26 जुलाई को होगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ऋषि गर्ग ने बताया कि ग्राम पंचायतों उपसरपंच पद के लिए नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने का समय प्रातः 10 बजे से प्रातः 10:30 बजे तक निर्धारित किया गया है। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 11 बजे तक कर ली जाएगी तथा नाम वापसी की कार्यवाही 11:30 बजे तक की जाएगी। मत पत्र तैयार करने का कार्य दोपहर 12:30 तक पूर्ण करना है तथा दोपहर 12:30 से 1 बजे तक मतदान होगा तथा 1 बजे से मतगणना व परिणाम की घोषणा की जाएगी।

फिल्म फेस्टिवल आयोजित

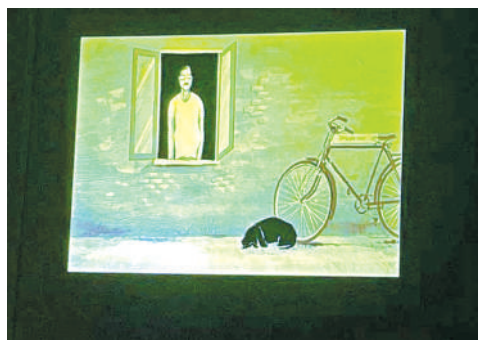

अनोखा तीर, बैतूल। आदिम कल्चरल एंड वेलफेयर सोसाइटी बैतूल और बैरागी कल्चरल एंड वेलफेयर सोसाइटी, सीहोर की ओर से घोड़ाडोंगरी नगर परिषद में पहली बार सतपुड़ा फिल्म फेस्टिवल का आयोजन यश कंप्यूटर घोड़ाडोंगरी में किया गया। फेस्टीवल में कोलकाता की उर्मी बैनर्जी की फिल्म अफलोट, बैतूल के अक्षत पाठक की फिल्म मूंछ और कुर्सी और रीवा के शांतनु शुक्ला की फिल्म सब्र अक्षत वरवड़े की फिल्म हमारा नेता कैसा हो दिखाई गई। फिल्म को सभी सिनेमाप्रेमियों ने बहुत सराहा।

पर्यावरण बचाने के लिए वृक्षों का सरंक्षण जरूरी : शुक्ला

अनोखा तीर, नर्मदापुरम।

शासकीय हाई सेकंडरी स्कूल जासलपुर के प्रांगण में 10 फलदार पौधों का वृक्षारोपण किया गया। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए पौधों को शाला परिसर में लगाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य श्रद्धा शुक्ला ने बताया कि प्रत्येक वर्षानुसार इस वर्ष भी फलदार वृक्षों का रोपण किया गया है और भविष्य में भी पूरे प्रांगण को हरा भरा करने का संकल्प लिया। वृक्ष ही पर्यावरण का आधार है। पर्यावरण को बचाने के लिए वृक्षों का सरंक्षण करना जरूरी है। प्राचार्य श्रद्धा शुक्ला ने बताया कि वृक्षारोपण के बुनियादी लाभों में से एक यह है कि वे जीवन देने वाली ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जानवरों द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। हालांकि पेड़ न सिर्फ हमें ऑक्सीजन देते हैं बल्कि फल, लकड़ी, फाइबर, रबर आदि और भी बहुत कुछ प्रदान करते हैं। पेड़ पशुओं और पक्षियों के लिए आश्रय का भी काम करते हैं। मनुष्य के स्वस्थ जीवन में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पर्यावरण एकमात्र घर है जो मनुष्यों के पास है, और यह हवा, भोजन और अन्य जरूरतें प्रदान करता है। इस अवसर पर प्राचार्य श्रद्धा शुक्ला, सविता दुबे, सविता दुबे सहित अन्य स्टॉफ मौजूद रहा।

आबकारी विभाग ने औद्योगिक क्षेत्र इटारसी से जप्त की अवैध शराब

अनोखा तीर, नर्मदापुरम।

कलेक्टर नीरज कुमार सिंह के निर्देशन में जिला आबकारी अधिकारी अरविंद सागर के मार्गदर्शन में औधोगिक क्षेत्र इटारसी, सब इंस्पेक्टर आरएस राठैर द्वारा मंगलवार को सुबह तड़के ग्राम तरारोड़ा संजय चौरे के कब्जे से 20 पाव प्लेन और ग्राम मरोड़ा शमशेर के कब्जे से 15 पाव प्लेन बरामद किए। ओवर ब्रीज के नीचे से 35 पाव बैगपाइपर जब्त किए। वहीं पुरानी इटारसी नाले से, झड़ी के किनारे 12 सौ किलो महुआ लहान एवं भारी मात्रा में शराब बनाने की सामग्री जप्त की एवं 20 लीटर हाथ भट्ठी मदिरा बरामद की। आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)के अंतर्गत कुल 3 प्रकरण कायम किए गए, 2 शराब तस्कर गिरफ्तार किए शराब तस्करों द्वारा भट्ठी बनाकर शराब बनाई जा रही थी, चालू भट्ठी को तोड़कर नष्ट किया। सब इंस्पेक्टर आरएस राठौर ने बताया कि आरोपियों को आबकारी अधिनियम की धारा 34(1)क के तहत गिरफ्तार किया गया है। श्री राठौर ने बताया कि जप्त सामग्री की कीमत 1 लाख 80 हजार के लगभग है। विशेष अभियान के तहत कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

कार्यालय-रजिस्ट्रीकरण अधिकारी प्राथमिक लघु वनोपज सहकारी समिति मर्या. टेमागांव जिला हरदा (पंजी. क्रं./2328 दिनांक 16.11.1988)

प्रेस विज्ञप्ति दिनांक :- 18.07.2022

// सूचना //

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि प्राथमिक लघु वनोपज सहकारी समिति मर्या. टेमागांव जिला हरदा (पंजी. क्रं./2328 दिनांक 16.11.1988) के संचालक मण्डल के सदस्यों का निर्वाचन हेतु सदस्यता सूची का प्रकाशन संस्था के सूचना पटल पर संबंधित विकासखण्ड टिमरनी/सहायक आयुक्त सहकारिता जिला हरदा एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक शाखा रहटगांव के कार्यालयों के सूचना पटल पर दिनांक 18.07.2022 को किया गया है। इस पर यदि किसी भी सदस्य को दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना है तो अधिकृत अधिकारी प्रबंधक श्री मदन बोरसे प्राथमिक लघु वनोपज सहकारी समिति मर्या. टेमागांव को संस्था कार्यालय टेमागांव या मुझे दिनांक 18.07.2022 से 25.07.2022 तक कार्यालयीन समय में सप्रमाण लिखित में कार्यालय सहायक आयुक्त सहकारिता जिला हरदा में प्रस्तुत कर सकते हैं, आपत्तियों का निराकरण संस्था कार्यालय प्राथमिक लघु वनोपज सहकारी समिति मर्या. टेमागांव पर दिनांक 26.07.2022 को समय 12.30 अपरान्ह बजे रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा किया जायेगा जिसमें सदस्य उपस्थित हो सकते हैं।

(आर.पी.सोलंकी)
रजिस्ट्रीकरण अधिकारी
प्राथमिक लघु वनोपज सहकारी
समिति मर्या. टेमागांव

प्रारूप छ -3
(म.प्र. सहकारी सोसायटी नियम 1962 के नियम 49-ग (3) के अंतर्गत)
सदस्यता सूची पर आपत्ति हेतु सदस्यों को सूचना का प्रारूप
कार्यालय रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नगर प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी भण्डार मर्यादित खिरकिया, जिला हरदा
पंजीयन क्रमांक/2330 दिनांक 31.12.1990

कमांक/नि.अधि./ 2022/ क्यू. दिनांक 18.07.2022

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि सोसायटी के संचालक मण्डल के सदस्यों का निर्वाचन दिनांक..... को साधारण सम्मिलन/विशेष साधारण सम्मिलन में सम्पन्न होना है। अतएव सोसायटी की सदस्यता सूची का प्रकाशन सोसायटी के नोटिस बोर्ड, उप/सहायक पंजीयक सहकारी सोसायटी कार्यालय, संबंधित विकास खण्ड, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की शाखा के सूचना पटल पर दिनांक 18.07.2022 को किया गया है। यदि किसी भी सदस्य को इस पर कोई दावा या आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो दिनांक 18.07.2022 से दिनांक 26.07.2022 तक सोसायटी कार्यालय में या कार्यालयीन समय में कार्यालय सहायक आयुक्त सहकारिता जिला हरदा में मुझे अथवा संस्था प्रबंधक श्री रामचरण राठौर को संस्था कार्यालय नगर प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी भण्डार मर्यादित, खिरकिया (छीपाबड़) में सप्रमाण लिखित में प्रस्तुत कर सकते हैं। प्राप्त दावे/आपत्तियों का निराकरण सोसायटी कार्यालय में दिनांक 26.07.2022 को दोपहर 02:00 बजे किया जायेगा।

आपत्तियों के निराकरण के दिन सदस्य उपस्थित हो सकते हैं। आपत्तियों के संबंध में पृथक से व्यक्तिशः सूचना नहीं दी जायेगी। यदि किसी सदस्य की कोई आपत्ति है और वह उपस्थित नहीं होता है तो भी उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर आपत्तियों का निराकरण किया जायेगा।

(यू.एस.राठौर)
रजिस्ट्रीकरण अधिकारी
नगर प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी
भण्डार मर्या., खिरकिया जिला-हरदा

रूद्राभिषेक व शिवमहापुराण कथा का पूर्णाहुति कार्यक्रम आज

अनोखा तीर, बनखेड़ी। नगर में श्रावण मास में श्री शिव महापुराण संगीतमय कथा के छठे दिन भगवान महाकाल भोले बाबा का महाअभिषेक तथा श्रीमहा शिवपुराण कथा का भक्तों ने श्रवण किया। कथा में पं. गोपाल कृष्ण शास्त्री द्वारा भोले बाबा की कथा का भक्तों को रसपान कराया गया। कथा में भगवान श्री गणेश जी के प्रकट होने के बारे में बताया। कथा व्यास ने बताया कि भगवान गणेश जब अपनी माता के द्वारपाल बनकर खड़े हुए थे और उसी समय भगवान महाकाल भोले नाथ का आना हुआ, तो गणेश ने भोले नाथ को रोकना चाहा, तो भोले नाथ ने उनके ऊपर त्रिशूल प्रहार से सर काट दिया। जिस पर माता पार्वती ने बहुत क्रोध किया। इसी प्रकार कथा में भगवान भोले नाथ और गणेश का प्रसंग चला। आज कथा का अंतिम दिवस है, पूर्णाहुति कार्यक्रम संपन्न होगा।

जिला न्यायालय में रक्तदान शिविर कल

अनोखा तीर, देवास। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अध्यक्ष प्रभात कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय देवास द्वारा रक्तदान महादान की मंशानुरूप वृहद रक्तदान शिविर का आयोजन एडीआर भवन जिला न्यायालय परिसर देवास में 21 जुलाई को आयोजित किया जा रहा है। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देवास श्रीमती निहारिका सिंह ने आमजन से अपील की है कि समस्त युवा, समाजसेवी एवं आमजन अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान शिविर में अपनी इच्छानुसार रक्तदान कर रक्तदान शिविर को सफल बनाये। जिससे की कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति आपके द्वारा किए रक्तदान से जीवन प्राप्त कर सके। रक्तदान के लिए नामांकन एवं अन्य जानकारी के लिए कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देवास पर संपर्क कर सकते हैं। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देवास श्रीमती निहारिका सिंह ने बताया कि विभिन्न संकटापन्न परिस्थितियों में लोगों को रक्त की आवश्यकता होती है। जिसकी प्रतिपूर्ति के लिए समय-समय पर विभिन्न समाजसेवी व्यक्तियों द्वारा रक्तदान कर उनको जीवनदान प्रदान किया जाता है। इसी अवधारणा पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय देवास द्वारा वृहद रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

संपादकीय

सेहत का मोर्चा

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया की व्यवस्थाओं के सामने गंभीर चुनौतियां पेश की हैं। उनमें एक बड़ी समस्या स्वास्थ्य के मोर्चे पर भी पैदा हुई है। खासकर विकासशील देशों में, जहां लंबे समय से चली आ रही कुछ बीमारियों को जड़ से समाप्त करने के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं। ये देश पहले ही कुपोषण, जलजनित बीमारियों आदि से पार पाने की कोशिश कर रहे हैं। उसमें कोरोना काल में जब संक्रमण से बचने के लिए बंदी की गई, तब नियमित चिकित्सीय सेवाएं बाधित हो गईं। अस्पतालों में भी तमाम सेवाओं में लगे चिकित्सकों, स्वास्थ्य कर्मियों को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए तैनात कर दिया गया। इस तरह कुछ आवश्यक सेवाएं ही चलाई जाती रहीं। ऐसे में पांच साल तक की उम्र के बच्चों को लगने वाले डिप्थीरिया, टिटनेस, काली खांसी, पोलियो आदि के नियमित टीके नहीं लगाए जा सके। संयुक्त राष्ट्र बाल आपात कोष यानी यूनीसेफ ने दुनिया भर के अपने अध्ययन में पाया है कि इस दौरान ढाई करोड़ बच्चों को नियमित टीके नहीं लगाए जा सके। इनमें से ज्यादातर बच्चे भारत, इंडोनेशिया, इथियोपिया, नाइजीरिया और फिलीपीन जैसे विकासशील देशों के हैं। यूनीसेफ ने इसे गंभीर चेतावनी के रूप में जारी किया है। जाहिर है, नियमित लगने वाले टीकों का चक्र टूटने या पूरा न हो पाने से उन बीमारियों के उभरने का खतरा बना रहेगा। किसी भी बीमारी को जड़ से समाप्त करने के लिए उसके विषाणु का चक्र तोड़ना बहुत जरूरी होता है, नहीं तो फिर से भयावह रूप में उसके पांव पसारने का खतरा रहता है। भारत जैसे देश में चेचक और पोलियो जैसी बीमारियों के विषाणु का चक्र तोड़ने में वर्षों लग गए। पोलियो के लिए लंबे समय तक अभियान चलाए रखना पड़ा। मगर काली खांसी, टिटनेस, हेपेटाइटिस आदि पर काबू पाना अब भी चुनौती है। दरअसल, भारत जैसे देश में न तो हर व्यक्ति को पीने का साफ पानी उपलब्ध है, न साफ वातावरण में रहने की जगह और न बहुत सारे लोगों को उचित पोषण मिल पाता है। इसके चलते भुखमरी और कुपोषण यहां सबसे बड़ी समस्या है। हर साल इनके आंकड़े कुछ बढ़े हुए ही दर्ज हो रहे हैं। महिलाओं में रक्ताल्पता का आंकड़ा चिंताजनक स्तर तक पहुंच गया है। ऐसे में शरीर में बीमारियों से लड़ने की क्षमता कमजोर होने से उनके फैलने की आशंका लगातार बनी रहती है। हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों ने ऐसी बीमारियों पर काबू पाने के मकसद से कई स्वास्थ्य योजनाएं चला रखी हैं और गांव स्तर पर भी इनसे संबंधित सेवाएं उपलब्ध कराने को लेकर गंभीरता दिखाई देती है। मगर बचपन में ही रोगों से लड़ने की क्षमता कमजोर हो जाए, तो आगे चल कर व्यक्ति के स्वस्थ रह पाने की संभावना क्षीण ही रहती है। अब कोरोना का प्रकोप काफी कम हो चुका है, जीवन सामान्य गति में लौट रहा है, स्वास्थ्य सेवाओं पर महामारी से लड़ने का दबाव कम है। इसलिए अब टीकों को सुचारु करने के साथ-साथ उन बच्चों पर भी गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है, जो नियमित टीकों से वंचित रह गए या जिनका टीकों का चक्र पूरा नहीं हो पाया। अब तो हर गांव तक स्वास्थ्य कर्मियों की पहुंच है, उन्हें ऐसे बच्चों की पहचान और उन्हें सहायता उपलब्ध कराने में लगाया जा सकता है। मगर इसके साथ ही उन बिंदुओं पर भी गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है, जिसकी वजह से बच्चों को उचित पोषण नहीं मिल पाता।

देश के असली मुद्दों से कहीं भटक न जाए मानसून सत्र

(मदन जैड़ा वरिष्ठ पत्रकार)

अक्सर संसद सत्र की शुरुआत से पहले ही पक्ष-विपक्ष के बीच टकराव शुरू हो जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से यह टकराव जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर नहीं, बल्कि किन्हीं अन्य विषयों पर होता है। इस बार भी ऐसा ही हुआ है। विपक्ष की नाराजगी उन शब्दों को असंसदीय घोषित करने को लेकर है, जिनका इस्तेमाल वह सदन में सरकार की घेराबंदी के लिए करता है। नाराजगी की एक अन्य वजह संसद भवन परिसर में सांसदों द्वारा किए जाने वाले धरना-प्रदर्शन पर रोक लगाने को लेकर है। इन मुद्दों पर विपक्ष के आक्रामक रुख से यह तय माना जा रहा है कि संसद के भीतर भी यही मुद्दे हावी रहेंगे। यदि ऐसा होता है, तो महंगाई, बेरोजगारी, देश के कई हिस्सों में बाढ़ से मची तबाही जैसे मुद्दे पीछे छूट सकते हैं।

शब्दों को असंसदीय घोषित करने पर क्या विपक्ष का विरोध जायज है? देखा जाए, तो संसद व विधानसभाओं में असंसदीय शब्दों को चिह्नित करने का कार्य एक सतत प्रक्रिया है। विपक्ष का तर्क कि चुनींदा शब्दों को असंसदीय घोषित कर उसकी आवाज रोकने का प्रयास हो रहा है, गले नहीं उतरता है। विपक्ष की जिम्मेदारी है कि वह लोकतंत्र की मजबूती के लिए अपनी भूमिका को मजबूत बनाए। जनता से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से संसद में उठाए। इसके लिए उसके पास शब्दों की कमी नहीं होनी चाहिए। फिर, सरकार की कमियों को संसदीय शब्दों का उपयोग कर भी उजागर किया जा सकता है। संतुलित शब्दों और भाषा के प्रयोग से संसद की मर्यादा भी कायम रखनी चाहिए। यह पक्ष-विपक्ष, दोनों की जिम्मेदारी है।

संसद की मर्यादा को कायम रखना जहां विपक्ष की भी जिम्मेदारी है, वहीं सरकार की जिम्मेदारी है कि वह लोकतांत्रिक परंपराओं का पालन करते हुए विपक्ष को भी बात रखने का पूरा मौका दे। यदि संसद के भीतर सत्ता पक्ष या सरकार विपक्ष को अपनी बात ही कहने का मौका न दे, तो यह संसदीय नियमों व परंपराओं के विरुद्ध होगा। ऐसी स्थिति में विपक्ष यदि संसदीय मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए संसद के भीतर और बाहर विरोध करता है, तब देश की जनता विपक्ष पर नहीं, सरकार पर सवाल उठाएगी। वरना बिना वजह हंगामा करना विपक्ष को ही नुकसान पहुंचाता है।

इसी प्रकार, संसद भवन परिसर में धरना-प्रदर्शन को लेकर जारी निर्देश पर भी विपक्ष नाराज है, पर राज्यसभा सचिवालय के अनुसार, 2013 और उससे पहले भी समय-समय पर ऐसे आदेश जारी हुए थे। हालांकि, तब और अब के आदेशों की भाषा में फर्क है। पहले जहां यह बात अनुरोध के रूप में कही जाती थी, वहीं अब निर्देश के रूप में है। वैसे, संसद भवन परिसर में प्रतीकात्मक विरोध का चलन बहुत पहले से है और उस पर रोक का औचित्य समझ में नहीं आता।

मानसून सत्र के दौरान राष्ट्रपति एवं उप-राष्ट्रपति चुनाव के दो अहम कार्य होने हैं। इसके अलावा, दोनों सदनों में करीब दो दर्जन से अधिक विधेयकों के पेश होने, चर्चा और पारित होने की संभावना है। इनमें केंद्रीय बिजली विधेयक, एंटी डोपिंग विधेयक, मध्यस्थता विधेयक, डीएनए टेक्नोलॉजी विधेयक ऐसे हैं, जो सीधे आम लोगों से जुड़े हैं। एंटी डोपिंग विधेयक खिलाड़ियों में नशे के इस्तेमाल को रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक एंटी डोपिंग एजेंसी के गठन के इरादे से लाया जा रहा है। मध्यस्थता विधेयक इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अदालतों में मुकदमों की भरमार है। इसी प्रकार डीएनए टेक्नोलॉजी विधेयक कानूनी प्रक्रिया में डीएनए तकनीक के विधिवत इस्तेमाल का रास्ता खोलता है। बिजली सुधारों के लिए बिजली विधेयक महत्वपूर्ण जरूर है, लेकिन इसके कुछ प्रावधानों का विरोध भी है। इससे निजीकरण बढ़ने की आशंका जताई जा रही है, जिस पर पक्ष-विपक्ष में टकराव हो सकता है। ऐसे में, आदर्श स्थिति यही होगी कि पक्ष-विपक्ष इन विधेयकों पर व्यापक चर्चा करके उनमें नए सुझावों को समाहित कर जनता के हितों की रक्षा करें। यदि गैरजरूरी मुद्दों पर हंगामे होते रहे, तो सत्र की सार्थकता बनी नहीं रहेगी।

संसद में विरोध सिर्फ विरोध के लिए नहीं हो। संसद की कार्यवाही को पूरा देश देखता है। यदि विपक्ष विरोध के नाम पर सीमा का उल्लंघन करेगा, तो न सिर्फ सरकार की कमियां दब जाएंगी, बल्कि चर्चा के केंद्र में विपक्ष का व्यवहार आ जाएगा।

जो काम देश का खुफियातंत्र नहीं कर सका

वह नूपुर शर्मा ने कर दिखाया!

- विष्णु कौशिक, भोपाल।

माना कि एक हाथ में अखंड हिन्दू राष्ट्र का एजेंडा और दूसरे में सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सबका साथ, सबका विश्वास के संकल्पबद्ध नारे को लेकर, पड़ाव-दर-पड़ाव अपने मूल लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही हिन्दू धर्मध्वजा वाहक भारतीय जनता पार्टी की कट्टर हिन्दूवादी प्रवक्ता, नूपुर शर्मा ने भले ही तमाम किस्म की मर्यादाएं लांघकर मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मोहम्मद की शान में जो गुस्ताखी की, जिसकी वजह से देश दंगे-फंसाद के नाजुक दौर से गुजर रहा हो, तब तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए थी, माना कि सर्वधर्म समभाव और वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव रखने वाली भारतीय जनता पार्टी की पंथ निरपेक्षता और निष्पक्षता के राजनीतिक आचरण के तकाजे पर नूपुर शर्मा के खिलाफ यदि फौरन और भी सख्त कार्यवाही की गई होती जिससे अपने धर्म के नाम पर दूसरे धर्म के कट्टरपंथियों को भड़काने वाले सरकारी और गैरसरकारी संत-महात्माओं तथा साधु-सन्यासियों के श्रीमुखों पर आत्मअनुशासन के मॉस्क लग सकें, जिससे कोरोना से भी लाख गुना खतरनाक वायरस और भी फैलने से रूक सकें, माना कि नूपुर शर्मा की हजरत मोहम्मद के खिलाफ आपत्तिजनक टीका के बदौलत देश में जगह-जगह जैसे दंगे-फंसाद किए करवाए गए, कत्लेआम हुए, वैसे इस देश में आजादी के बाद खुलेआम धमकी देकर कम से कम पहले तो कभी नहीं हुए। निलंबित भाजपा प्रवक्ता नूपुर शर्मा की अमर्यादित पोस्ट की प्रतिक्रिया में फौरन दंगे-फंसाद होने लगे, आगजनी, लूटमार और पेट्रोल बमों से हमले करने का दुस्साहस किया जाने लगा, जान-माल की हिफाजत के लिए जिम्मेदार पुलिस को दौड़ा-दौड़ाकर मारा जाने लगा और हमेशा की तरह सुख-दुख में जनता का साथ देने का दावा करने वाले नेता घरों में दुबककर स्थिति कंट्रोल में आने का इंतजार करते रहे। मतलब साफ है कि दंगे-फंसाद की तैयारियां बहुत पहले से की जा रही थी, इंतजार बस मौके और बहाने का था, जो भाजपा की प्रवक्ता नूपुर शर्मा ने आसानी से उपलब्ध करा दिया। नूपुर शर्मा की पोस्ट की क्रिया की प्रतिक्रिया की शुरूआत यूपी के औद्योगिक नगर कानपुर से की गई और मोदी-योगी सरकार को सबक सिखाने की सरेआम सरकार को जो चुनौती दी गई, उसका अंत फिलहाल तो नजर नहीं आता। मान लिया कि देश में मौजूदा हालात के लिए सिर्फ और सिर्फ वह नूपुर शर्मा हैं, जो भारतीय जनता पार्टी की कथित नफरती विचारधारा का प्रतिबिंब है, मगर पानी को बारूद बनाने की क्षमता रखने वाले इस कड़वे सच को समझ ही नहीं सके या समझने की जरूरत ही नहीं समझी कि अनजाने में ही सही नूपुर शर्मा की बदौलत ही सालों से गजबा-ए-हिन्द मतलब भारत के खिलाफ युद्ध और 2047 तक इस्लामिक राष्ट्र बना लेने की साजिश सामने आ सकी। गजब तो उस वक्त हुआ जब देश को इस्लामिक राष्ट्र में बदलने की साजिश रचने वाले पाकिस्तानी एजेंटों के कई राज्यों में महल-अटारी तन गए, हथियार चलाने के ट्रेनिंग सेंटरों में युवकों का ब्रेन वॉश कर उन्हें भारत विरोधी ट्रेनिंग दी जाने लगी, वाट्सएप्प पर घातक संदेशों के साथ खुफिया और गोपनीय जानकारियों को आदान-प्रदान होने लगा मगर देश-प्रदेशों की खुफिया एजेंसियों को सालों से चल रही इन साजिशों की भनक तक नहीं लगी, इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात और हो भी क्या सकती है। वैसे भी मानकर चला जाता है कि भनक लगती भी तो कैसे जब खुफियातंत्र के अधिकांश होनहार अफसरों और जनता से निरंतर संपर्क में रहने वाले खुफिया कर्मचारी, विरोधी दलों के नेताओं की जासूसी कर अपने नंबर बढ़वाने में व्यस्त हों, जब आपस में

राजनीतिक रंगमंच

तालमेल ही न हो, गोपनीय सूचनाओं का आदान-प्रदान ही न हो, बल्कि गोपनीय सूचनाएं पहले आतंकवादियों के ठौर-ठिकानों पर पहुंचती हो तो फिर वही होगा, जो हो रहा है। अब असल सच तो सभी जानते हैं लेकिन अक्सर एक आरोप यह भी लगाया जाता है कि भारत के नौकरशाहों के जितने मधुर और 'सुफलदायी' संबंध दुश्मन देशों के साथ हैं, उतने तो स्वदेश की सुरक्षा के जिम्मेदार उन लोगों के साथ भी नहीं है, जिनके ऊपर देश की सुरक्षा के नाम पर अकूत धन खर्च किया जाता है। अब हैरत की बात तो यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पल-पल की खबर रखने वालों को देश के कई राज्यों खासकर बिहार में चल रहे विरोधी ट्रेनिंग सेंटरों का पता ही न हो, ऐसा कैसे संभव है। लेकिन जो हो रहा है और जो किया जा रहा है और जिसके नतीजे सारा देश भुगत रहा है, उसे नकारा भी तो नहीं जा सकता। पता नहीं खुफियातंत्र के जिम्मेदारों से किसी ने पूछने की जुर्रत की भी अथवा नहीं कि हुजूर सालों से भारत के खिलाफ युद्ध और इस्लामिक राष्ट्र बनाने की जो साजिश की जा रही थी, तब आप कहां थे और किसकी ताबेदारी में थे। कम से कम देश की तसल्ली के लिए इतना ही बता देते तो तमाम किस्म के टेक्स देने वाली जनता पर बड़ी मेहरबानी होती। असल में वह तो सारे देश को नूपुर शर्मा का आभार मानना चाहिए कि अनचाहे ही सही जो पोस्ट की थी, जिसके लिए उन्होंने माफी भी मांग ली, मगर उसी पोस्ट की क्रिया की प्रतिक्रिया के स्वरूप कम से कम इतनी बड़ी साजिश का पता तो चल गया, अन्यथा साजिशों का यह कार्यक्रम बेखौफी के साथ कब से चल रहा है और कब तक चलता रहता, कहा नहीं जा सकता। नूपुर शर्मा की पोस्ट की प्रतिक्रिया के स्वरूप जो फसाद हुए, कम से कम देश के बारह-तेरह राज्यों से पाकिस्तानी एजेंट और आतंकवादी पकड़े जा चुके हैं, कुछ फरार हैं, कुछ पनाहगाहों में छिपे हुए हैं। लेकिन कड़वा सच तो यही सामने आया कि सालों से यह कार्यक्रम चल रहा है, कौन मास्टरमाइंड है, कहां से धन आ रहा है, कहां भड़काने वाले पोस्टर छप रहे हैं, कौन दीवारों पर रातोंरात चिपकाकर शासन-प्रशासन और खुफियातंत्र को चुनौती देकर ऐसे ललकार रहा है, जैसे अपराधी पाकिस्तानी एजेंट न होकर देश की रक्षा करने तथा नेताओं की हिफाजत के लिए जिम्मेदार खुफियातंत्र हो। अब तमाम हालात की रोशनी में एक बात तो साफ है कि नूपुर शर्मा कि पोस्ट की बदौलत साजिशों और साजिशकर्ताओं के मंसूबे तो सामने आ चुके हैं, लेकिन अभी भी पता नहीं कितने देशी-विदेशी गद्दार जो देश का नमक खाकर पाकिस्तान की मदद कर नमक हरामी कर रहे हों और फिर भी छुट्टे घूम रहे हों, कहा नहीं जा सकता। अभी उदयपुर से अमरावती और अमरावती से बिहार के सीतामणि तक नूपुर शर्मा की पोस्ट के समर्थकों की गर्दन धड़ से अलग करने की धमकियां दी जा रही है और बड़ी बात तो यह है कि ऐसे काम खुफियातंत्र और सरकार के सतर्क होने के बावजूद भी किए जा रहे हैं। इसका बड़ा प्रमाण यह है कि नूपुर शर्मा कहां सुरक्षा के लिए छिपी हुए हैं, इसका पता देश के अफसरों को पाकिस्तानी एजेंट अतहर के मोबाइल से ही चल सका। कुल मिलाकर बात साफ है कि अगर नूपुर शर्मा की आवांछनीय पोस्ट नहीं होती और पोस्ट के ऊपर हिंसक प्रतिक्रिया नहीं होती और हिंसक प्रतिक्रिया से देश की खुफिया एजेंसियों की नींद नहीं खुलती तो क्या से क्या हो सकता था, इसका अंदाजा भली भांति लगाया जा सकता है। लिहाजा सारे देश को तो नूपुर शर्मा का आभार मानना चाहिए और उनकी सुरक्षा के लिए सरकार और सुप्रीम कोर्ट पर दबाव डालना चाहिए। वैसे भी अब भले ही सुप्रीम कोर्ट से नूपुर शर्मा द्वारा की गई टिप्पणी के खिलाफ तमाम किस्म की कानूनी कार्यवाही 10 अगस्त तक रोक दी गई हो लेकिन जान से मारने और रेप करने की धमकियां अभी भी दी जा रही है, जिससे साफ है कि देशविरोधी ताकतों और उनके एजेंटों और उनके हौसलों में किसी प्रकार की कमी आने के बदले हौसले और बढ़ते ही नजर आ रहे हैं। इस स्थिति में अगर सुप्रीम कोर्ट नूपुर शर्मा और उनके परिवार की सुरक्षा का आदेश जारी कर देता तो कहीं बेहतर होता।

और अंत में.....

बहरहाल जब तक खुफियातंत्र के होनहार अफसरों को सुविधाजीवी असली, नकली, फसली नेताओं की सुरक्षा से हटाकर देश की सुरक्षा में नहीं लगाया जाता, देश में पल-पुस रहे देशी-विदेशी आतंकवादियों और मस्जिदों तथा मदरसों की फंडिंग नहीं रोकी जाएगी, पनाहगाहों को नेस्तानाबूद नहीं किया जाएगा, तब तक वही होगा जो हो रहा है।

अच्छी स्थिति तब मानी जाती है जब कोई देश आयात की तुलना में निर्यात ज्यादा करे। इससे व्यापार आधिक्य (ट्रेड सरप्लस) देखने को मिलता है, अन्यथा देश को व्यापार घाटे का सामना करना पड़ता है। भारत इस समय इसी समस्या से जूझ रहा है। भले पिछले दिनों हमारा निर्यात बढ़ा हो, पर आयात पर निर्भरता काफी ज्यादा रही है। निर्यात के साथ-साथ भारत में होने वाले आयात में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज़ की गई है। व्यापार घाटा भी अब तक के सभी आंकड़ों को पार कर चुका है। कच्चे तेल और सोने के आयात पर देश को भारी रकम खर्च करनी पड़ती है।

निर्यात बढ़ाने की जरूरत

(विजय प्रकाश श्रीवास्तव)

वस्तुओं के निर्यात में विश्व स्तर पर भारत की भागीदारी कभी दो फीसद से ज्यादा नहीं रही। जबकि भारत दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। इसे देखते हुए यह निर्यात हिस्सेदारी नगण्य ही कही जाएगी। अगर वस्तु निर्यात में हम दुनिया में अब तक अपनी धाक नहीं जमा सके हैं तो इसका एक कारण वस्तुओं के उत्पादन में बड़े पैमाने पर पीछे रह जाना है। किसी भी देश का निर्यात और आयात उसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) पर असर डालते हैं। यदि आयात ज्यादा हो और व्यापार घाटा बढ़ रहा हो, तो देश की मुद्रा विनिमय दर पर प्रतिकूल असर पड़ता है। जब देश की मुद्रा में कमजोरी देखने को मिले तो निर्यात बढ़ाना और आयात करना महंगा होता है। इसके विपरीत देशी मुद्रा जब मजबूत होती है तो इससे निर्यात पर बोझ पड़ता है और आयात के लिए कम कीमत चुकानी होती है। मुद्रास्फीति की दर ऊंची होने पर माल की कीमतों और मजदूरी में वृद्धि के कारण निर्यात पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

अच्छी स्थिति तब मानी जाती है जब कोई देश आयात की तुलना में निर्यात ज्यादा करे। इससे व्यापार आधिक्य (ट्रेड सरप्लस) देखने को मिलता है, अन्यथा देश को व्यापार घाटे का सामना करना पड़ता है। भारत इस समय इसी समस्या से जूझ रहा है। भले पिछले दिनों हमारा निर्यात बढ़ा हो, पर आयात पर निर्भरता काफी ज्यादा रही है। निर्यात के साथ-साथ भारत में होने वाले आयात में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज़ की गई है। व्यापार घाटा भी अब तक के सभी आंकड़ों को पार कर चुका है। कच्चे तेल और सोने के आयात पर देश को भारी रकम खर्च करनी पड़ती है। घरेलू जरूरतों के कारण आयात को कम करना कई बार संभव नहीं होता और यदि इसमें कटौती की जा सकती है तो केवल सीमित मात्रा में ही। इसलिए यदि देश को अपना व्यापार घाटा कम करना है तो निर्यात बढ़ाने के प्रयास करने होंगे।बीते दो साल प्राय: सभी देशों के लिए कठिन और अनिश्चितता भरे रहे हैं। अब दुनिया इन मुश्किल हालात से उबर रही है। केंद्र सरकार 31 मार्च 2023 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष के लिए निर्यात का यथार्थपरक लक्ष्य तय करना चाहती है। पर अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करने में मुश्किलें हैं क्योंकि वैश्विक विकास दर को लेकर अनुमान उत्साहवर्धक नहीं हैं। विश्व बैंक का मानना है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण उत्पन्न आपूर्ति और व्यापार बाधाओं के चलते वैश्विक विकास दर इस साल सिमट कर 2.9 फीसद रहेगी, जो वित्त वर्ष 2020-21 में 5.7 फीसद थी।

चिंताजनक यह है कि इधर भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी घट रहा है। अक्तूबर 2021 में देश के पास 642 अरब डालर का विदेशी मुद्रा भंडार था, जो घट कर अब 590 अरब डालर रह गया है। इसमें आगे और कमी आ सकती है क्योंकि विदेशी संस्थागत निवेशक शेयर बाजार में बिकवाली में लगे हैं। किसी देश को विदेशी मुद्रा की जरूरत विभिन्न कारणों से होती है जिनमें से एक आयात भुगतान भी है। विदेश में पढ़ाई के लिए गए लोगों को भी वहां के सारे खर्चों का भुगतान विदेशी मुद्रा में ही करना होता है। ऐसे में निर्यात बढ़ा कर सरकार विदेशी मुद्रा कमा सकती है।

भारत जिन वस्तुओं का निर्यात करता है, उनमें मुख्य रूप से सूती धागा, इंजीनियरिंग सामान, काफी, इलेक्ट्रानिक वस्तुएं, जूट और जूट से बने सामान, चमड़ा और इससे बने उत्पाद, हस्तशिल्प सामान, परिधान, प्लास्टिक आदि शामिल हैं। देश में पैदा या निर्मित होने वाले तमाम उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग निर्यातक संगठन पहले से स्थापित हैं। उदाहरण के लिए, कृषि व प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद, इलेक्ट्रानिक्स व कंप्यूटर साफ्टवेयर निर्यात संवर्धन परिषद आदि।

जब वैश्विक स्तर पर निर्यात की बात होती है तो बांग्लादेश और चीन का जिक्र आना स्वाभाविक है। बांग्लादेश विश्व में एक प्रमुख निर्यातक देश के रूप में उभर रहा है। जहां तक चीन की बात है, तो आज हममें से शायद ही कोई होगा जो चीन में बने उत्पादों का इस्तेमाल न करता हो। जल्दी टूटने या खराब होने वाले उत्पादों को लेकर कई बार चीन का मजाक भी उड़ाया जाता है, पर यदि एपल जैसी कंपनियां जो आमतौर पर गुणवत्ता से समझौता नहीं करतीं, मोबाइल फोन और अन्य सामान चीन में ही बनवा कर दुनिया भर में बेचती हैं तो इसमें कहीं न कहीं कोई अनुकूल पक्ष भी होगा। हालांकि अब कई छोटे देश चीन को चुनौती देने में लगे हैं। वियतनाम, ताइवान, दक्षिण कोरिया, मेक्सिको और कुछ हद तक मलेशिया भी वैश्विक निर्यात में अपना महत्त्वपूर्ण मुकाम बना चुके हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था की पहचान निर्यातोन्मुखी अर्थव्यवस्था के रूप में कभी नहीं रही। साल 1991 में देश में उदारीकरण की शुरुआत के समय से ही भारत का आर्थिक विकास निजी और सार्वजनिक कंपनियों के निवेश तथा सरकार द्वारा सामाजिक-आर्थिक विकास की योजनाओं पर किए जाने वाले खर्च से चालित रहा है। वस्तुओं के निर्यात ने इसमें सहायक भूमिका मात्र निभाई है। अब हमारे निर्यात का एक बड़ा हिस्सा सेवाओं का है। सूचना प्रौद्योगिकी में भारत की मजबूत स्थिति होने के बाद दुनिया के विकसित और अन्य देशों में भी सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी सेवाओं की मांग बढ़ी है। भारत कानून संबंधी सेवाओं का भी निर्यात करता है। इस समय देश के कुल निर्यात में सेवाओं का हिस्सा चालीस फीसद से ज्यादा है। देश में सेवा क्षेत्र के विस्तार की रफ्तार भी अच्छी-खासी है। 2021-22 में सेवाओं का निर्यात 254 अरब डालर का रहा, जो 2020-21 के 206 अरब डालर रहा था, यानी तेईस फीसद का इजाफा।

वस्तुओं के निर्यात में विश्व स्तर पर भारत की भागीदारी दो फीसद से कभी ज्यादा नहीं रही। जबकि भारत दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, इसे देखते हुए यह निर्यात हिस्सेदारी नगण्य ही कही जाएगी। यदि वस्तु निर्यात में हम दुनिया में अब तक अपनी धाक नहीं जमा सके हैं तो इसका एक कारण वस्तुओं के बड़े पैमाने पर उत्पादन में पीछे रह जाना है। अन्य कारणों में सरकार की नीतियों में जल्दी-जल्दी बदलाव हैं जिसके कारण निवेशकों को अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है।

कर की दरों में अस्थिरता, नियमों में जब-तब फेरबदल और नीतियों को पलट देने जैसे भी कारण इसमें शामिल हैं। कारोबार करने में आसानी को लेकर दावे जरूर किए जा रहे हैं, पर जमीनी स्तर पर स्थिति उतनी नहीं बदली है जितनी कि बदल जानी चाहिए थी। निर्यात बढ़ाने के लिए हमें अलग-अलग क्षेत्रों पर ध्यान देते हुए उनके लिए बाजार के मद्देनजर विशिष्ट रणनीति निर्मित करनी होगी। औषधियों, आभूषणों और रसायनों के निर्यात के लिए दुनिया का बाजार सामने है। एक अनुमान के अनुसार हम प्रति वर्ष अट्ठावन अरब डालर मूल्य के हीरों तथा आभूषणों का निर्यात कर सकते हैं, जबकि वास्तविक निर्यात सिर्फ तीस अरब डालर का ही हो रहा है। भारत ने 2030 तक एक लाख करोड़ रुपए की वस्तुओं के निर्यात का लक्ष्य रखा है।

वर्ष 2019-20 के आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया था कि भारत निर्माण क्षेत्र में चीजों को जोड़ने के कार्य के बल पर विश्व निर्यात बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा कर छह फीसद तक पहुंचा सकता है और इससे करीब आठ करोड़ नए रोजगार पैदा हो सकते हैं। निर्यातोन्मुखी इकाइयों की स्थापना के लिए सरकार ने नीतियां तथा प्रोत्साहन व्यवस्था पहले से बना रखी है। अब आवश्यकता ऐसी नई इकाइयों की स्थापना उन इलाकों में करने की है जो अपेक्षाकृत पिछड़े हैं। स्वाभाविक है कि इसके लिए इन स्थानों पर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करानी होंगी। इसके लिए निवेश चाहिए होगा। पर इस तरह के निवेश का प्रतिफल दीर्घकालिक होगा। सबसे बड़ा फायदा आस-पास के लोगों को रोजगार मिलने में दिखेगा। निजी व सरकारी दोनों स्तरों पर रोजगार सृजन हेतु निर्यात वृद्धि की मदद लेने की रणनीति बनाने की ज़रूरत है।

*स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, देशबंधु परिसर, प्लॉट नं.26-बी, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल,म.प्र. से मुद्रित अनोखा तीर कार्यालय नया बस स्टैंड के सामने, हरदा, म.प्र. से प्रकाशित। **प्रधान संपादक** सुरेश लोहाना / **संपादक** प्रहलाद शर्मा / **प्रबंध संपादक** महेश कौशिक। फोन : 07577-226771 मो.9425045480, समाचार चयन के लिए पी.आर. बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार। **सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरदा रहेगा।***

बारिश ने तोड़े पुराने रिकार्ड, जनजीवन अस्त-व्यस्त

● सुक्ता बांध के गेट खोले, नदी किनारे बसे घरों को कराया खाली ● बारिश का नजारा देखने पहुंचे लोग, शहर से गांवों का संपर्क टूटा

अनोखा तीर, खंडवा।

पिछले दो दिनों से लगातार बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। मंगलवार को जिले में दो इंच से ज्यादा यानी 59 एमएम औसत वर्षा हुई। इंदिरासागर और ओंकारेश्वर बांध उफनने के करीब है। कभी भी ओवरफ्लो हो सकते हैं। दो दिन पहले नर्मदापुरम का तवा बांध ओपन हो चुका है। जिसके कई गेट खोलने से हंडिया में तेज आवागमन पानी का हुआ है। इससे इंदिरासागर लगभग लबालब हो गया है। हो सकता है कि मंगलवार बुधवार की दरमियानी रात में ही इंदिरा सागर के गेट खोलना पड़ें। ऐसा हुआ तो ओंकारेश्वर बांध के भी गेट खोल सकते हैं। खंडवा का नागचून तालाब और भगवंत सागर भी लबालब हो गए हैं। जिले में रविवार रात से हो रही बारिश ने जनजीवन प्रभावित किया है। खंडवा जिले के सुक्ता नदी पर बने बांध के गेट खोले जाने के बाद डाउन स्ट्रीम में नदी किनारे बसे खंडवा और पंधाना तहसील के लगभग 7 गांव के उन परिवार के घर को खाली करवाया है, जो नदी और नालों किनारे बसे हुए हैं। वहीं, नर्मदा का भी लगातर जल स्तर बढ़ रहा है। नर्मदापुरम में बने तवा बांध से गेट खोले जाने के बाद खंडवा जिले

के इंदिरासागर बांध और ओंकारेश्वर बांध में जलस्तर मेंटेन करने के लिए अगले 24 घंटे में पानी छोड़े जाने की संभावना जताते हुए अलर्ट जारी किया गया है। इंदिरासागर में जल स्तर 255 मीटर हो गया, जुलाई में जलस्तर यहां 258 मीटर निर्धारित स्टॉक है। मंगलवार बारिश को लेकर जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जारी आदेश के तहत स्कूलों की छुट्टी रही। इसी को ध्यान में रखते हुए एसडीएम, तहसीलदार, पुलिस और एनडीआरएफ की टीम नदी के किनारे बसे हुए जसवाड़ी, बेड़ियांव, हापला, दीपला, खिड़गांव, भागफल, जामठी और पीपरहट्टी गांव के उन लोगों को गांव की स्कूल और पंचायत भवन में शिफ्ट किया गया है, जिनके मकान नदी नालों की जद में आ रहे हैं। ओंकारेश्वर बांध के डाउनस्ट्रीम के नर्मदा नदी के तटीय क्षेत्रों में भी अलर्ट जारी कर दिया गया है।

खंडवा जिले में वर्षा की स्थिति देखें तो मंगलवार को 59 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई इस दिन तक औसत 585.8 मिली मीटर वर्षा हो चुकी है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि इस दिन तक पिछले साल केवल 201 मिलीमीटर वर्षा हुई थी। शहर में लगातार वर्षा से कई जगह जलजमाव की स्थिति बनी। गांधी नगर क्षेत्र में एक मकान की दीवार गिर गई। शिवाजी चौक पर जलजमाव की स्थिति पूरे दिन बनी रही। घासपुरा की अब्बास तैयब उर्दू प्राथमिक शाला के परिसर में पानी भर गया। वहीं नाले के पास बने कुछ घरों में भी जलजमाव की स्थिति बनी। नाले की सफाई नहीं होने से पुलिया के पास कचरा अटक गया जिससे पानी सड़क पर बह निकला। आबना नदी खतरे के निशान तक पहुंच गई। तीन पुलिया से दो से तीन फीट पानी बहने से आवागमन पूरे दिन बंद रखा गया।

बारिश में आवक कम होने से बढ़े हरी सब्जियों के दाम

अनोखा तीर, खंडवा।

जिले में लगातार हो रही बारिश से सब्जियों के दामों में काफी उछाल आया है। बारिश की वजह से सब्जी की फसलें खराब होने और ट्रांसपोर्ट से सब्जियों की आवक में कमी आने की वजह से इनकी कीमतें पिछले सप्ताह की तुलना में काफी बढ़ी हैं। इसलिए इन दिनों हरी सब्जियों के दाम करीब दो गुना बढ़ गए हैं। जबसे मॉनसून की शुरुआत हुई है,

तब से सब्जी के दामों में बढ़ोतरी हो रही है। इसका कारण ट्रकों के आने में कमी होना है। जिले में मानसून की दस्तक से पहले सब्जियों की कीमतें आसमान छूने लगी हैं। बाजार में जो हरी सब्जी 40 रुपए किलो बिक रही थी, वह अब 80 रुपए किलो में मिल रही है। आलू 25 से 30 रुपए और प्याज 15-20 रुपए किलो मिल रहे हैं। टमाटर, भिन्डी, गिलकी, टिंडे करेले, हरी मिर्च 80 रुपए किलो बिके। इसका सीधा असर आम लोगों की जेब पर पड़ रहा है। बताया जा रहा है कि बारिश के समय सब्जियों के दाम और ज्यादा बढ़ सकते हैं। स्थानीय खेतों से सब्जी की आवक बिल्कुल कम हो गई। यही कारण है कि पिछले 10 दिनों में सब्जियों की कीमत बढ़ने लगी है।

नगरीय निकाय चुनाव की मतगणना आज

● 60 प्रत्याशियों की हार-जीत का होगा खुलासा

● शासकीय कॉलेज में 9 बजे से होगी मतगणना

अनोखा तीर, बड़वाह।

नगरी निकाय के दूसरे चरण में 13 जुलाई को नगर पालिका चुनाव सम्पन्न हुए। जिसकी मतगणना बुधवार सुबह 9 बजे शुरू होगी। जो शहर के शासकीय महाविद्यालय परिसर में की जाएगी। जहां एसडीएम अनुकूल जैन और तहसीलदार रंजना पाटीदार के बताए अनुसार शहर के 18 वार्डों के करीब 60 प्रत्याशियों के हार जीत का फैसला होगा। वहीं करीब 15 हजार 698 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया था। इसमें 8167 पुरुष्ज्ञ और 7531 महिलाओं ने अपने मत की आहुति दी है। इस तरह शहर में करीब 72.74 प्रतिशत मतदान हुआ है। बुधवार सुबह 9 बजे शुरू होने वाली मतगणना में प्रत्येक पोलिंगवार आकड़े सामने आएंगे। बड़वाह नगर पालिका में वार्ड क्रमांक 1 और 2 में केवल एक ही पोलिंग बूथ पर वोटिंग हुई है। इसलिए यहां का परिणाम सबसे पहले आएगा। इसके बाद जिन वार्डों में दो पोलिंग बूथ है। वहां पर दो राउंड में मतगणना होगी। तहसीलदार पाटीदार ने बताया कि सुबह करीब 10 बजे तक सभी वार्डों के हार जीत की स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

● मतगणना स्थल पर वार्ड अनुसार एक व्यक्ति रहेगा मौजूद – तहसीलदार पाटीदार ने बताया कि मतगणना स्थल पर प्रत्याशियों या कोई अन्य एक ही व्यक्ति को मतगणना के समय उपस्थित रहने की अनुमति रहेगी। इसके अलावा मीडियाकर्मियों के लिए अलग से मीडिया सेंटर बनाया जाएगा। नगरीय निकाय चुनाव के परिणामों को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है। मतगणना के दौरान परिसर में मोबाइल और कैमरे आदि प्रतिबंधित रहेंगे। इसके अलावा कॉलेज परिसर में बेरिकेड्स लगाए जाएंगे। सुरक्षा की दृष्टि से भारी संख्या में पुलिस बल मुस्तैद रहेगा। साथ ही सीसीटीवी कैमरे से भी निगरानी की जाएगी ।

● पहले डाक मतपत्रों की होगी गिनती – मतगणना शुरू होने से पहले डाक मतपत्रों की गिनती की जाएगी। तहसीलदार ने बताया कि 5 डाक मतपत्रों की गिनती होना है। इसके अलावा मतगणना में 3 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। यानी 18 वार्डों में करीब 54 कर्मचारी उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा 18 कर्मचारियों की अलग से ड्यूटी लगाई है। शासकीय कॉलेज में बने एक ही रूम में सभी वार्डों की मतगणना पूरी होगी। गोरतलब है की मतगणना के एक दिन पूर्व मंगलवार सुबह एसडीएम अनुकूल जैन, तहसीलदार रंजना पाटीदार, टीआई प्रकाश वास्कले, नपा सीएमओ केशव सिंह सगर, कृषि अधिकारी बी एस सेंगर सहित अन्य अधिकारियों ने पुन : महाविद्यालय कक्ष का निरीक्षण किया।

यही रात अंतिम यही रात भारी

● नगर सरकार को लेकर अटकलें तेज, आज होगा तय ● किसकी बनेगी नगर सरकार, भाजपा या कांग्रेस, आज आएगा फैसला

मनीष मडाहर, खरगोन।

यही रात अंतिम यही रात भारी, बस अब एक रात की कहानी है सारी..। प्रसिद्ध रामायण सीरियल का ये गीत भगवान राम से युद्ध के पहले लंकापति रावण के अंर्तमन में चल रहे द्वंद को दर्शाता है। रावण रात भर इसी उथेड़बुन में लगा रहा कि अब कल क्या होगा? विजय होगी या पराजय? ये आखिरी रात भारी पड़ रही थी। दशानन की तरह ही ठीक यही दशा नगर पालिका चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों की भी रही। बुधवार को होने वाली वोटों की गिनती को लेकर मंगलवार की रात उन पर भारी गुजरी होगी। उनके अंर्तमन में भी जीत-हार को लेकर द्वंद मचा रहा। आंखों से नींद गायब रही। कुछ तो चैन से सो भी नहीं पाए, सुबह जल्दी होने के इंतजार में रात भर बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। उनकी नींद उड़ना स्वाभाविक है,क्योंकि उनके कर्मों का फल उन्हें आज मिलने वाला है। हाल ही में संपन्न हुए नगरीय निकाय चुनाव में चुनी जाने वाली परिषद को लेकर तमाम तरह की कयासबाजी लगाई जा रही है। नई नगर सरकार के गठन को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। किसके सिर पर नगर सरकार का ताज पहनाया जाएगा। मतदान के दौरान मतदाताओं ने पार्षदों का भविष्य ईवीएम में बंद कर दिया था। आज घोषित परिणाम के बाद यह तय हो जाएगा कि किस वार्ड की बागडोर किसके हाथ में होगी। आज शाम तक 138 प्रत्याशियों मे सें 33 पार्षदों के भाग्य का फैसला हो जाएगा। नगर सरकार के लिए पिछले एक सप्ताह से चाय और पान की दुकानों पर की जाने वाली चर्चा में लोग तरह-तरह की कयासबाजी लगा ई जा रही हैं। इसके तहत कोई कह रहा है कि भिया कुछ भी हो सकता है, कुछ भी के पाना मुश्किल है। स्थानीय भाषा में लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। हर वार्ड का अपना-अपना गणित बता रहे हैं। कोई आधी-आधी सीटें बीजेपी-कांग्रेस की बात रहे हैं, तो कोई अपने हिसाब का आंकड़ा बता रहे। हालांकि चुनावी चौपाल में चर्चा है कि वार्ड-3, 4, 5, 9, 28, 32 वार्डों में भी कांटे की टक्कर है। हो सकता है यहां से चौंकाने वाले परिणाम आएं। आज शाम तक इन सब प्रत्याशियों का भाग्य तय हो जाएगा और सारी अटकलों पर विराम लग जाएगा। चुनाव परिणाम को लेकर जहां राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों को उत्साह है वहीं आम जनमानस में भी चुनाव परिणाम जानने की उत्सुकता है। मंगलवार शाम को जिला कलेक्टर कुमार पुरुषोत्तम एवं एसपी धर्मवीर सिंह ने मतगणना स्थल का निरीक्षण किया और सारी व्यवस्थाओं को चौक चौबंद रखने के निर्देश दिए उनके अनुसार प्रशासन पूरी निर्भीकता निष्पक्षता के साथ अपना कार्य कर

रहा है और वह मतगणना के दिन भी इसी दक्षता के साथ चुनाव परिणाम भी घोषित किए जाएंगे।

जीत मिले या हार, ढोल तो बजेगा यार...

अक्सर लोग चुनाव हार जाने के बाद सीधे अपने घर चले जाते हैं और अपनी हार की समीक्षा करते हैं। चुनाव जीतने के बाद नाच-गाकर जीत का जश्न मनाना आम बात है, लेकिन क्या आपने कभी सुना है हार के बाद किसी उम्मीदवार ने हार का जश्न मनाया हो और अपने मतदाताओं से घर-घर जाकर फिर से आशीर्वाद लिया हो। खरगोन नगर पालिका वार्ड 9 के निर्दलीय उम्मीदवार गिरीश पटेल जिनका चुनाव चिन्ह केक है। गिरीश पटेल ने बताया कि पार्षद चुनाव में जीते या हारे वह अपने क्षेत्र की जनता का आभार प्रकट करने के जनता के बीच में उनसे मिलने और आशीर्वाद लेने के लिए जुलूस से अपने कार्यकर्ताओं के साथ जाएंगे अगर ऐसा हुआ तो खरगोन के इतिहास में वो पहले उम्मीदवार होंगे जो चुनाव हारने के बाद भी जनता के बीच उनका आशीर्वाद लेने पहुंचेंगे।

घर से लापता बेटे की तलाश को लेकर थाने में दिया आवेदन

● रविवार शाम को अस्पताल जाने का कहकर घर से निकला था अजय

अनोखा तीर, बड़वाह। ग्राम पंचायत माचलपुर निवासी अजय पिता भवानी राम पिछले 48 घंटे से घर लापता है। अजय रविवार शाम को घर से अस्पताल जाने का कहकर निकला था, लेकिन रात्रि में वापस घर नहीं पहुंचा। सोमवार सुबह 7 बजे अजय की बाइक, चप्पल एवं हाथ के शर्ट की बाह गांव के बाहर सड़क किनारे मिली। परिजनों को आशंका है कि अजय का किसी ने अपहरण किया है। मंगलवार को पिता भवानीराम अपने रिश्तेदारों एवं ग्रामवासियों के साथ बड़वाह थाने पहुंचे। जहां टीआई प्रकाश वास्कले को आवेदन देकर इस मामले में कार्यवाही कर अजय को ढूंढने की मांग की है।

भवानीराम ने बताया कि बेटा अजय रविवार शाम को घर पर अस्पताल जाने का बोलकर निकला था। लेकिन देर रात तक वह वापस घर नहीं लौटा। जबकि उसका मोबाइल फोन भी बंद बता रहा था। सोमवार सुबह 7 बजे सुचना मिली कि अजय की बाइक, चप्पल और कपड़े गांव के बाहर सड़क किनारे पड़े मिले हैं। जब परिजन मौके पर पहुंचे तो बेटे अजय की बाइक के पास चप्पल और अजय की शर्ट की बाह मिली। जिसकी सूचना परिजनों ने पुलिस को दी। इसके बाद बड़वाह थाने पर अजय की गुमशुदगी दर्ज करवाई गई। फिलहाल पुलिस टीम अजय की तलाश में जुटी है। परिजनों ने सोमवार को बड़वाह पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन 30 घंटे बाद भी कुछ पता नहीं चला तो रिश्तेदार मंगलवार को बड़ी संख्या में ग्रामवासियों के साथ पुलिस थाने बड़वाह पहुंचे।

अजय के पिता ने कहा...

पिता भवानीराम ने बताया कि बेटे अजय द्वारा गाँव के ही विष्णु गुर्जर द्वारा शासकीय संपति पाइप चोरी करते हुए पकड़ा था। तब विष्णु ने मेरे बेटे के साथ मारपीट की थी। साथ ही घर पर आकर विष्णु सहित उसके अन्य सहयोगियों ने उसके साथ मारपीट की थी। जिसकी रिपोर्ट अजय द्वारा बड़वाह पुलिस थाने में दर्ज कराई थी। उस रिपोर्ट में भी पुलिस ने मुख्य कारण चोरी रोकने वाली बात का उल्लेख नहीं किया था। यही नहीं विष्णु ने भी अपने साथियों के साथ झूठी रिपोर्ट पुलिस थाने में दर्ज करवा दी थी। अजय के परिजनों ने आरोप लगाया है कि विष्णु और उसके साथियों ने मिलकर अजय का अपरहण कर इस घटना को अंजाम दिया है। इस मामले में टीआई वास्कले ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही कर अजय को ढूंढा जाएगा।

चिकित्सा अधिकारियों एवं नर्सिंग ऑफिसर को गर्भपात देखभाल का दिया प्रशिक्षण

अनोखा तीर, खंडवा। जिला चिकित्सालय खंडवा में चिकित्सा अधिकारियों एवं नर्सिंग ऑफिसर हेतु गर्भपात देखभाल प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण का शुभारंभ सिविल सर्जन एवं अन्य अधिकारियों द्वारा फीता खोलकर किया गया। सिविल सर्जन द्वारा कहा गया कि चिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण 12 दिवस एवं नर्सिंग स्टाफ का प्रशिक्षण 3 दिन तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञ द्वारा सुरक्षित गर्भपात का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने चिकित्सा अधिकारियों से कहा कि आप सभी अच्छे से प्रशिक्षित होकर जाए, ताकि आप अपने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं कम्युनिटी हेल्थ सेंटर पर यह सेवाएं बेहतर तरीके से दे सकेंगे। इस अवसर पर डॉ. लक्ष्मी डोडवे स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. रश्मि कौशल स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं डॉ. कोमल छाबड़ा सहायक प्राध्यापक मेडिकल कॉलेज खंडवा द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से आए प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रशिक्षण के दौरान डॉ. लक्ष्मी डोडवे स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा बताया गया कि सभी मेडिकल ऑफिसर की ट्रेनिंग 12 दिवस तक चलेगी जिसमें सभी को सुरक्षित गर्भपात की नई तकनीक के बारे में विस्तार से समझाया जाएगा। उन्होंने बताया कि गर्भ समापन केवल शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था में प्रशिक्षित डॉक्टर से ही करवाएं। एमटीपी अधिनियम 1971 के अनुसार निम्न परिस्थितियों में 20 सप्ताह तक की गर्भ अवधि का गर्भ समापन कानूनी वैद्य है, जिसके तहत यदि गर्भवती स्त्री के जीवन को खतरा है या गर्भवती स्त्री की शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर क्षति या होने वाले शिशु में गंभीर जन्मजात विकृति होने की संभावना एवं अन्य गंभीर परिस्थिति में किया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य सीएससी एवं पीएचसी पर सुरक्षित गर्भपात सेवाएं प्रदान करने एवं उन्हें गर्भ निरोधक साधनों हेतु प्रेरित करवाना तथा जटिलताओं का प्रबंधन व संक्रमण से बचाव एवं उसका प्रबंधन करवाना, ताकि मातृ मृत्यु दर में कमी आ सके। इस अवसर पर डॉ. अनिरुद्ध कौशल सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथ को कलेक्टर ने किया रवाना

अनोखा तीर, खंडवा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिले के अधिक से अधिक किसानों की खरीफ फसलों का बीमा कराने के लिए प्रचार प्रसार रथ को मंगलवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय से कलेक्टर अनूप कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रथ 15 अगस्त तक जिले के सभी विकासखंड के ग्रामों का भ्रमण कर किसानों को खरीफ

फसलों का बीमा कराने के लिए प्रेरित करेगा और बीमा योजना की जानकारी बताएगा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत ऋणी व अऋणी कृषक खरीफ-2022 की फसलों का बीमा 31 जुलाई तक करा सकते है। इस दौरान उप संचालक कृषि केसी वास्केल, सहायक संचालक कविता गवली, इंश्योरेंस कंपनी के जिला प्रतिनिधि भूपेंद्र पालीवाल और आईटीसी मिशन से शैलेन्द्र सिंह जादोन, राहुल पाटीदार मौजूद थे।

न्यूज ट्रेक

स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत का सपना स्वच्छता से ही साकार

अनोखा तीर, देवास। समाज का विकास तब ही संभव है जब हमारा वातारण स्वच्छ होगा। यह कार्य केवल शासन का ही नही है। जब तक समाज में जन जागृति नहीं आएगी, तब तक जन अभियान नहीं बनेगा। इस कार्य में वातावरण निर्माण करना अति आवश्यक है। उक्त विचार श्रीमती भावना मिश्रा

ने जन शिक्षण संस्थान देवास द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में व्यक्त किए। पर्यावरण स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत हटेसिंग गोयल कालोनी में स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचारों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त किए। जिसमें हमारा समाज, स्वच्छ देवास, स्वस्थ परिवार आदि विषयों पर जागरूकता चित्रों का वर्णन किया गया। कार्यक्रम उपरांत संस्थान द्वारा सामग्री प्रदान की गई व श्रेष्ठ चित्रों को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम का संयोजन खुशबू केमा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुकेश रेकवाल, अम्बिका, यशस्वी, प्रियांशी, समीक्षा, आयुषी, रीमा, हर्षिता, लवण्या, गुंजन, ईशीका, हर्षित, निष्ठा, दिव्यांश आदि उपस्थित थे।

बूस्टर डोज लगाने में संस्था केयर इंडिया ने किया सहयोग

अनोखा तीर, देवास। संस्था केयर इंडिया महिला एवं पानी परियोजना द्वारा 20 जुलाई को कोविड-19 बूस्टर डोज लगाने में सहयोग किया गया। भारत में 18 साल से 59 साल के लोगों को 15 जुलाई से भारत में 18 साल से 59 साल के लोगों को आज से फ्री में बूस्टर डोज लगेगी। अगले 75 दिनों तक

सभी लोगों के वैक्सीनेशन को लेकर अभियान चलाया जाएगा। सरकारी टीकाकरण केंद्रों में जाकर लोग वैक्सीन लगवा सकते हैं। दरअसल, स्टडी में पता चला है कि दोनों डोज वैक्सीन के शुरूआती लेने के बाद करीब छह महीने में एंटीबॉडी का स्तर कम होने लगता है, ऐसे में बूस्टर डोज की मदद से बॉडी की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। बता दें कि 60 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों को पहले से ही मुफ्त में बूस्टर डोज लगाई जा रही है। अगले 75 दिनों तक सभी लोगों के वैक्सीनेशन को लेकर अभियान चलाया गया है। संस्था केयर इंडिया महिला एवं पानी परियोजना से मास्टर ट्रेनर संतोष कुमार मालवीय उपस्थित थे।

श्रावण मास में पर्यावरण संरक्षण एवं विश्वशांति को लेकर पदयात्रा 24 को

अनोखा तीर, देवास। श्रावण के पवित्र माह में शिवभक्तों द्वारा पर्यावरण संरक्षण, विश्वशांति, खुशहाली आमजन की स्वस्थ की कामना को लेकर देवास से उज्जैन तक नेशनल यूनिटी ग्रुप की पद यात्रा 24 जुलाई को प्रात : 8 बजे श्री मनकामेश्वर महादेव मंदिर से पवित्र नदी के जलाभिषेक कर प्रारंभ होगी। नेशनल यूनिटी ग्रुप के संस्थापक अनिल सिंह ठाकुर ने बताया कि पद

यात्रा के संबंध में श्री शीलनाथ धूनी मल्हार रोड पर ग्रुप की आवश्यक बैठक हुई। जिसमें ग्रुप के पदाधिकारियों व सदस्यों ने यात्रा को सफल बनाने को लेकर अपने-अपने विचार व्यक्त किए। बैठक में मुख्य रूप से पोपसिंह परिहार, संजय शुक्ला, सुनीलसिंह ठाकुर, धीरज पांडे, पूर्व पार्षद नरेंद्र यादव, प्रताप राव आवटे, सिद्धार्थ मोदी, शैलेंद्र अड़लावदिया आदि उपस्थित थे। बैठक का संचालन अजय सिरोलिया ने किया। आभार मुकेश प्रजापति ने किया। इस दौरान दीपसिंह पवार, किशोरसिंह रघुवंशी, प्रेमदास बैरागी, नंदकिशोर जाट, मोहन पालीवाल, कन्हैयालाल वर्मा आदि उपस्थित थे।

जनता की अदालत का फैसला आज

● मतगणना के बाद होगा फैसला, किस दल की बनेगी नगर सरकार

अनोखा तीर, नसरुल्लागंज।

आज बुधवार को नगर सरकार के 13 वार्ड पार्षदों के भाग्य का फैसला होगा। जनता की अदालत में यह फैसला होगा कि नगर के मतदाताओं के द्वारा नगर के विकास की चाबी किस दल को सौंपी है। नगर परिषद चुनाव में भाजपा अपना वर्चस्व कायम रख पाती है या फिर कांग्रेस के अतिरिक्त निर्दलीयों का पलड़ा भारी रहता है,यह देखना रोचक होगा। बीते 13 जुलाई को संपन्न हुए नगर परिषद के चुनाव में वार्ड पार्षदों के बीच कशमकश की स्थिति देखने को मिली है। नगर में 15 में से 13 वार्डों में चुनाव की प्रक्रिया संपन्न हुई थी और 2 वार्ड निर्विरोध भाजपा के खाते में चले गए थे। इस दौरान कांग्रेस के द्वारा केवल 12 वार्डों में चुनाव लड़ा गया। दोनों ही राजनीतिक दल भाजपा कांग्रेस के अतिरिक्त निर्दलीय प्रत्याशियों ने भी चुनाव में पूरा जोर लगाया है। भाजपा ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का रोड़ शो कराकर एन वक्त पर चुनाव परिणाम अपने पक्ष में करने का पूरा प्रयास किया था। ऐसे में जनता की अदालत में कौन पास होगा इसका फैसला आज 10 बजे के बाद आने की संभावना है। बीते 13 जुलाई को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुए मतदान के बाद आज 20 जुलाई बुधवार को कृषक संगोष्ठि भवन में मतगणना का कार्य संपन्न होंगा। वार्ड पार्षद के लिए 13 वार्डों में 50 प्रत्याशियों का भाग्य 11348 मतदाताओं के द्वारा ईव्हीएम बंद कर दिया गया था। नगर में 13 पार्षदों के चुनाव का फैसला होगा। जिसे लेकर राजनीतिक दलों के साथ ही मतदाताओं को बेसब्री से इंतजार है।

भाजपा-कांग्रेस के दिग्गजों की प्रतिष्ठा दाव पर - नगरीय निकाय चुनाव में भाजपा कांग्रेस के कई दिग्गज नेता व कार्यकर्ता चुनाव मैदान में उतरे है। इसके अतिरिक्त कई भाजपा नेताओं ने अपने समर्थकों को टिकट दिलवाया है। ऐसे में कई नेताओं व कार्यकर्ताओं की प्रतिष्ठा दाव पर लगी है। भाजपा की और से वरिष्ठ अधिवक्ता बाबूलाल जाट, मारूति शिशिर, राजेश पवांर, महेन्द्र परिहार वहीं कांग्रेस की और महिला नेत्री रमा पटेल, पूर्व पार्षद अशफाक खान, मजिद खान, संतोष गौर के अतिरिक्त कई निर्दलीय प्रत्याशियों की प्रतिष्ठा दाव पर लगी है।

9 बजे से शुरू होगी मतगणना - आज बुधवार को सुबह 9 बजे से स्थानीय कृषक संगोष्ठि भवन में मतगणना की प्रक्रिया प्रारंभ होगी। मतगणना की प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए कुल 14 टेबल लगाई जाएंगी। प्रत्येक वार्ड के लिए एवं 1 टेबल निर्वाचन कर्ता मत पत्र की गिनती के लिए लगाई गई है और प्रत्येक वार्ड की अलग-अलग गणना की जाएगी। जिसमें गणना अधिकारी के साथ ही पार्षद एवं निर्दलीय प्रत्याशियों के अभिकर्ता या स्वयं प्रत्याशी मौजूद रहेंगे। सुबह 8 बजे से मतगणना स्थल पर प्रवेश देने का सिलसिला प्रारंभ होगा और 8:30 बजे अभ्यार्थियों या उनके प्रतिनिधि की मौजूदगी में स्ट्रांग रूम से ईवीएम मशीनों को निकाला जाएगा और मतगणना स्थल पर ले जाया जाएगा। इस दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम भी किए गए है।

1 घंटे में सामने आ जाएंगे परिणाम - नगरीय निकाय चुनाव दूसरी बार ईवीएम मशीन से संपन्न हुए है। ऐसे में मतगणना की स्थिति मात्र 1 घंटे के बाद ही प्रत्याशी के सामने आ जाएगी। सुबह 10 बजे तक जीत हार की स्थिति सामने होगी और किस प्रत्याशी को विजय मिली है इसका फैसला भी हो जाएगा। मतगणना स्थल पर प्रत्येक वार्ड की गणना एक साथ प्रारंभ होगी और धीरे-धीरे परिणाम आना प्रारंभ हो जाएंगे। नगर के वार्ड क्रमांक 4,8 व 13 में 1-1 मतदान केन्द्र होने पर इन तीनों वार्डो के परिणाम सबसे पहले सामने आएंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सभी वार्डो में 2-2 मतदान केन्द्र बनाए गए थे। इस लिए इनके परिणाम एक साथ आएंगे।

मीडिया कक्ष होगा अलग से

मतगणना स्थल पर ही एक मीडिया कक्ष बनाया गया है जिसमें मीडिया कर्मी मौजूद रहेंगे। मीडिया कर्मियों को मीडिया कक्ष तक मोबाइल ले जाने की छूट रहेंगी। इसके अतिरिक्त मीडिया कर्मी मतगणना हाल में अपना मोबाईल नही ले जा सकेंगे। साथ ही परिणामों की स्थिति मीडिया कर्मियों को उनके कक्ष में ही उपलब्ध कराई जाएगी। परिणाम जानने के लिए मीडिया को इधर से उधर भटकना नही होगा और उनके पास ही परिणामों की एक-एक प्रति पहुंचाई जाएगी।

नगर पालिक निगम देवास की मतगणना आज

- कलेक्टर व एसपी ने मतगणना कक्ष, स्ट्रांग रूम, मीडिया सेंटर का किया निरीक्षण
- संबंधित अधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश

अनोखा तीर, देवास।

कलेक्टर चन्द्रमौली शुक्ला एवं एसपी डॉ. शिवदयाल सिंह ने उत्कृष्ट स्कूल देवास में मतगणना कक्ष, स्ट्रांग रूम, मीडिया सेंटर का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कहा कि मतगणना संबंधित सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय रहते पूर्ण कर लें। बरसात का मौसम देखते हुए मतगणना केन्द्र पर सभी व्यवस्थाएं करें। मतगणना के दिन 20 जुलाई को वाहन पार्किंग की व्यवस्था मल्हार स्मृति मंदिर देवास में रहेगी। निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर महेन्द्र सिंह कवचे, अतिरिक्त पुलिस अधिकारी मंजीत सिंह चावला, एसडीएम प्रदीप सोनी, डिप्टी कलेक्टर प्रियंका मिमरोट, डिप्टी कलेक्टर शिवानी तरेटिया, सीएसपी विवेक सिंह चौहान, ट्राफिक डीएसपी किरण शर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। नगर पालिक निगम देवास के मतदान की मतगणना 20 जुलाई को सुबह 9 बजे से उत्कृष्ट स्कूल देवास में होगी। मतगणना के लिए कुल 45 टेबले लगाई गई है। मतगणना 9 कक्षों में होगी। प्रत्येक कक्ष में 5 टेबल लगाई गई है। मतगणना के 5 से 8 राउण्ड रहेंगे। मतगणना के दौरान मतगणना भवन तथा परिसर में मोबाइल फोन का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। मीडियाकर्मी मीडिया सेंटर तक मोबाइल/कैमरा/वीडियो कैमरा ले जा सकेंगे। मीडियाकर्मियों को मतगणना कक्ष में मोबाइल, कैमरा, वीडियो कैमरा ले जाने की अनुमति नहीं रहेगी। मतगणना के दौरान निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थी और उसके निर्वाचन एवं गणना अभिकर्ता की मतगणना स्थल पर प्रवेश के दौरान जांच की जाएगी और मोबाइल लाने पर मतगणना स्थल में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

देवास जिले में नगरीय निकाय निर्वाचन के दूसरे चरण में नगर पालिक निगम देवास में मतदान सम्पन्न हुआ। जिसमें नगर पालिक निगम देवास में 45 वार्डो के 269 मतदान केन्द्र बनाये गये थे। नगरपालिक निगम देवास में 69 प्रतिशत मतदान हुआ। जिसमें पुरुष मतदाताओं का प्रतिशत 71.63 तथा महिला मतदाताओं का प्रतिशत 66.28 प्रतिशत रहा। नगरपालिक निगम देवास में 2 लाख 39 हजार 652 मतदाता में से 1 लाख 65 हजार 376 मतदाताओं ने मतदान किया। जिसमें 87 हजार 195 पुरुष मतदाता, 78 हजार 180 महिला मतदाता और 1 अन्य ने मतदान किया था।

एक एसडीओपी, 2 टीआई, 2 एसआई सहित 32 पुलिसकर्मी रहेंगे तैनात

मतगणना स्थल कृषक संगोष्ठी भवन को चारों तरफ से सील कर दिया गया है और पुलिस सुरक्षा के साये में रहेगा और इसे पूरे तरह पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है। एस.डी.ओ.पी आकाश अमलकर, सहित 2 टीआई, 2 एसआई व 32 पुलिस कर्मियों की तैनाती मतगणना स्थल पर की गई है। इसके अतिरिक्त 3 पुलिस मोबाईल वेन लगातार नगर का भ्रमण करती रहेंगी। पुलिस के द्वारा मतगणना स्थल को बेरिकेट्स लगाकर चारों और सील कर दिया गया है और यहां पर वाहनों का प्रवेश भी पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। एसडीओपी आकाश अमलकर ने बताया कि मतगणना स्थल पर केवल पास धारकों को ही प्रवेश दिया जाएगा।

हाईटेंशन लाइन के करंट से एक की मौत, एक गंभीर

- करंट की चपेट में आने वाले दोनों ममेरे भाई

अनोखा तीर, देवास।

शहर के विकास नगर चौराहा क्षेत्र में एबी रोड से लगे गर्ग स्टेट में शासकीय शिक्षक के किराए के मकान में रहने वाले दो ममेरे भाई सोमवार रात मकान के सामने से निकली बिजली लाइन के करंट की चपेट में आ गए। एक को करंट लगा तो दूसरा बचाने दौड़ा, जिससे वह भी गंभीर रूप से घायल हो गया। दोनों को जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां जांच के बाद डॉक्टर ने एक को मृत घोषित कर दिया, जबकि दूसरे का उपचार शुरू किया गया।

बताया गया है कि दोनों युवक रीवा जिले के निवासी हैं और देवास में एक निजी कंपनी में काम करते हैं। मंगलवार को मृतक का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया। वहीं मामले को लेकर औद्योगिक थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर प्रकरण को जांच में लिया है। एबी रोड़ स्थित गर्ग स्टेट में निवासरत शासकीय शिक्षक तिलकराज सेम के मकान में किराए से रह रहे दो युवक सचिन उर्फ गुड्डू पिता इंद्रबहादुर 24 वर्ष व अजय पिता रमेश सिंह उम्र 22 वर्ष दोनों निवासी रीवा हालमुकाम देवास दोनों देवास की निजी कंपनी में काम करते हैं, औद्योगिक थाना प्रभारी अनिल शर्मा ने बताया कि ये दोनों रिश्ते में ममेरे भाई हैं। सोमवार रात को जब सचिन मकान के ऊपरी हिस्से में गैलरी में खड़ा था तो घर के बाहर विद्युत पोल से निकली हाईटेंशन लाईन से करंट की चपेट में आ गया, उसे बचाने के लिए अजय दौड़ा, उसे भी करंट लग गया। करंट लगने से सचिन की मौके पर मौत हो गई और वो गैलरी की दीवार पर काफी देर तक लटका रहा। बाद में दोनों को जिला अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टर ने जांच के बाद सचिन को मृत घोषित कर दिया। वहीं घायल अजय को भर्ती करके उपचार शुरू किया गया। घटना की सूचना मिलने के बाद दोनों के कंपनी के मित्र जिला चिकित्सालय पहुंचे जिन्होनें दोनों के परिजनों को घटना की सूचना दी थी। जिसके बाद मंगलवार सुबह मृतक का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया। वहीं मामले को लेकर औद्योगिक थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर प्रकरण को जांच में लिया है।

पिता ने की थी कावड़ यात्रा की शुरूआत, पुत्र ने इसे रखा है जारी

अनोखा तीर, नसरुल्लागंज।

श्रावण मास के दौरान नगर में नीलकंठ स्थित नर्मदा नदी से कावड़ यात्रा के माध्यम जल लाकर भगवान भोले का अभिषेक करने की शुरूआत करने वाले जगदीश प्रसाद महेश्वरी जेके टेलर चाहे इस दुनिया में न रहे हो लेकिन उनके द्वारा

की गई पहल पर विराम न लगे इस लिए उनके पुत्र मोनू महेश्वरी के द्वारा अपने पिता के इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए अपने साथियों के साथ कावड़ यात्रा का क्रम जारी रखा। 18 जुलाई को श्रावण मास के प्रथम सोमवार पर मोनू महेश्वरी ने नर्मदा नदी से पवित्र जल लाकर अस्पताल प्रांगण में स्थित मनकामनेश्वर महादेव मंदिर में भगवान भोले का अभिषेक किया। इस दौरान उन्होंने बताया कि बीते कई वर्षों से उनके पिता के द्वारा श्रावण मास के मौके पर नर्मदा नदी से जल लाकर प्रत्येक सोमवार को भगवान भोले का अभिषेक विभिन्न मंदिरों में किया जाता था। वह भगवान के अनन्य भक्त थे और उनके द्वारा शुरू की गई इस पहल पर विराम न लगे इसके लिए उन्होंने अपने साथियों के साथ जाकर इसे जारी रखा।

एक वर्ष में ही क्षतिग्रस्त हुआ 3 करोड़ से अधिक का बाक्स ब्रिज

- पांडागांव स्थित सीप नदी पर बने ब्रिज पर सरिए निकलने से दुर्घटना की आशंका

अनोखा तीर, नसरुल्लागंज। पांडागांव स्थित सीप नदी पर 2 वर्ष पूर्व ब्रिज के क्षतिग्रस्त हो जाने पर 3 करोड़ रुपए से भी अधिक की लागत से बाक्स ब्रिज का निर्माण आवागमन सुचारू रूप से जारी रखने के लिए बनाया गया था। लगभग एक वर्ष के अंतराल में यह ब्रिज तैयार हुआ था, लेकिन दूसरी बरसात में ही ब्रिज की हकीकत उभर कर सामने आने लगी। ब्रिज जगह-जगह से क्षतिग्रस्त होने लगा है और गड्डों का साम्राज्य होने के साथ ही निकले हुए सरिये दुर्घटना को खुला आमंत्रण दे रहे है। लगातार बरसात होने के चलते पिछले एक सप्ताह से यह सड़क मार्ग प्रतिदिन 3 से 4 घंटे के लिए बरसात का पानी ब्रिज पर होने से अवरुद्ध हो रहा है। इस दौरान कई बार बड़े वाहन चालकों को ब्रिज से वाहन निकालने पर भय का माहौल बना हुआ है। ब्रिज

पर हो रहे बड़े-बड़े गड्डे और इनमें निकल रहे सरिये कही दुर्घटना का कारण न बन जाए इसके लिए वाहन चालकों को सावधानी पूर्वक अपने वाहनों को निकालना पड़ रहा है। लेकिन इस मामले में स्थानीय प्रशासन के साथ ही ब्रिज कार्पोरेशन के अधिकारियों के द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। हालात यह है कि 3 करोड़ रुपए खर्च करने के बावजूद भी ब्रिज की हालत मात्र एक वर्ष के अंतराल में दयनीय हो गई है। जबकि बरसात अभी शुरूआती दौर में है। सीप नदी में पानी का बहाव तेज होने के साथ ही ऊपरी क्षेत्र में हो रही बरसात यहां पर आम लोगों के लिए परेशानी का कारण बन रही है। जबकि प्रशासन के द्वारा ब्रिज का निर्माण लोगों के आवागमन की सुविधा के लिए कराया गया था। लेकिन निर्माण एजेंसी के द्वारा किए गए निर्माण की स्थिति उद्घाटन के पूर्व ही सामने आ गई थी। उस समय कई लोगों ने घटिया निर्माण को लेकर ब्रिज कार्पोरेशन एवं अधिकारियों को अवगत कराया था। लेकिन इस मामले में अधिकारियों ने संज्ञान नहीं लिया था।

दुर्घटना का कारण बन सकता है क्षतिग्रस्त ब्रिज - सीप नदी पर बना हुआ बाक्स ब्रिज दुर्घटना का बड़ा कारण बन सकता है। पुल पर पानी होने की दशा में वाहनों का आवागमन पूरी तरह रोक दिया जाता है लेकिन पानी उतरने के बाद क्षतिग्रस्त ब्रिज पर निकले हुए सरिए बड़े वाहनों के लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। बस संचालकों सहित ट्रक चालकों का मानना है कि सरियों के कारण वाहनों के टायरों के खराब होने की दशा में कभी भी घटना घटित हो सकती है। वर्तमान में सीप नदी उफान पर होने से पानी का दबाव यहां पर लगातार बना हुआ है। ऐसी स्थिति में इस गंभीर समस्या की और ध्यान दिया जाना आवश्यक हो गया है।

ब्रिज की लागत 3 करोड़ से अधिक, एक वर्ष में ही हकीकत सामने - ब्रिज कार्पोरेशन के द्वारा तैयार कराए गए बाक्स ब्रिज की लागत 3 करोड़ रुपए से अधिक की है। जिसकी हकीकत मात्र एक वर्ष में ही सामने आने लगी है। बीते वर्ष बरसात के पूर्व अधिकारियों के दबाव के चलते जैसे-तैसे इसे शुरू कराया गया था। उस दौरान भी ब्रिज पर गड्डे उभर कर सामने आने लगे थे। लेकिन इस वर्ष तो दूसरी बरसात के शुरूआती दौर में ही 3 करोड़ की लागत पानी में नजर आ रही है। मात्र एक वर्ष के अंतराल में हकीकत सामने आने से निर्माण एजेंसी के कार्य की पोल देखी जा सकती है।

न्यूज ट्रेक

आप सभी राजा परीक्षित हैं और आपके पास एक सप्ताह का ही समय है: पं. शुक्ला

अनोखा तीर, आठनेर। नगर की श्रीराम मंदिर धर्मशाला में पं. प्रमोद कुमार शुक्ला बोरी वालों के द्वारा भागवत कथा का वाचन किया जा रहा है। कथा सुनाते हुए पं. शुक्ला ने बताया कि आप सभी राजा परीक्षित हैं और आप सभी को सात दिवस का समय विधाता ने दिया है। आप सभी का अंत 7 दिवस के अंदर ही होगा, यही भागवत कथा कहती है। पंडित शुक्ला ने बताया कि राजा परीक्षित ने जब संग ऋषि के गले में मरा हुआ तक्षक नाग डाला। जिस पर संग ऋषि के पुत्र ने अपने पिता का मजाक होते हुए देखा तो उन्होंने श्राप दिया कि यही तक्षक नाग सातवें दिन राजा परीक्षित को जीवित होकर डसेगा। पंडित शुक्ला ने बताया कि इस कथा का उद्देश्य है कि आप आपके जीवन में मात्र एक सप्ताह का समय है। इस सप्ताह भर के समय को आप श्रेष्ठता पूर्वक जिए, किसी का दिल ना दुखाएं, किसी का परिहास ना करें, किसी का मखोल ना उड़ाएं, भगवान की आराधना करें, आपके पास मात्र 1 सप्ताह का ही समय है। यह बात राजा परीक्षित पर ही लागू नहीं होती आप सभी पर भी लागू होती है। पंडित शुक्ला ने बताया कि जब परमात्मा की आप पर कृपा होती है तो आप मिट्टी उठाते हो तो वह सोना बन जाती है और परमात्मा आपसे रूठ जाएं तो आपके पास का सोना भी मिट्टी बन जाता है।

सिविल न्यायालय में रक्तदान शिविर आज

अनोखा तीर, पिपरिया। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं माननीय आलोक अवस्थी प्रधान जिला एवं सेशन न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नर्मदापुरम के मार्गदर्शन में 20 जुलाई 2022 दिन बुधवार को सुबह 10.30 बजे से सिविल न्यायालय परिसर पिपरिया में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अतः रक्तदान हेतु इच्छुक मानव सेवाभावी नागरिक एवं एनजीओ संस्थाएं इस रक्तदान शिविर में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर रक्तदान कर पुण्य के भागीदार बनें। रक्तदान के लिए इच्छुक रक्तदाता एवं एनजीओ संस्थाएं कार्यालय तहसील विधिक सेवा समिति पिपरिया मोबा. नं. 9685478439 में संपर्क कर सकते हैं।

मालगाड़ी की चपेट में आने से 45 वर्षीय युवक की मौत

अनोखा तीर, पिपरिया। रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म १ पर एक अज्ञात ४५ वर्षीय युवक की मालगाड़ी ट्रेन की चपेट में आ जाने के कारण मौत हो गई। जीआरपी पुलिस थाने के प्रभारी रमेश दाहिया ने बताया कि एक अज्ञात ४५ वर्षीय युवक की मालगाड़ी की चपेट में आने से मृत्यु १२ जुलाई को हो गई है। जिसका जीआरपी पुलिस थाने में मर्ग कायम किया गया है। अभी तक उक्त युवक की शिनाख्ती नही हो पाई है। जिसका रंग सांवला है।

पीएम नेशनल अप्रेन्टिसशिप मेला 22 को

अनोखा तीर, बैतूल। कौशल विकास संचालनालय मप्र के तत्वावधान में शासकीय औद्योगिक संस्था सदर बैतूल द्वारा 22 जुलाई को सुबह 10 बजे से प्रधानमंत्री नेशनल अप्रेन्टिसशिप एक दिवसीय मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आईटीआई ग्रेज्युएट, डिप्लोमा, पीएमकेवीवाय सर्टिफिकेट उर्तीण पुरूष एवं महिला अभ्यर्थी हिस्सा ले सकते हैं।

सावन के पहले सोमवार को शिव मंदिरों में हुए भजन-कीर्तन

अनोखा तीर, पिपरिया। भगवान भोलेनाथ का सबसे प्रिय सावन के महीने के पहले सोमवार को नगर के शिव मंदिरों में शिवलिंग का अभिषेक कर महिलाओं ने भजन कीर्तन किया। शिवमंदिरों में शिवभक्तों में भारी उत्साह देखने को मिला। सुबह से ही शिवालयों में हर-हर महादेव के जयकरे लग रहे थे। नगर के प्राचीन ऊमर वाले शिव मंदिर, रिपटा मंदिर, आनंद बाग में शिव हनुमान मंदिर सहित अन्य शिव मंदिरों में शिव भक्तों का उत्साह का

अंदाजा शिवालयों में भजन कीर्तन के साथ वहां पहुंचने वाले भक्तों को देखा जा सकता है। सावन के पहले सोमवार को नगर के शिव मंदिरों में श्रद्धालु जलाभिषेक के लिए पहुंच गए। श्रद्धालुओं में काफी उत्साह था। शिव मंदिरों में भक्तो ने पूर्ण विधिविधान के साथ भगवान शिव की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक किया। नगर के प्राचीन मंदिरों सहित अन्य सभी प्रमुख शिवालयों में बोल बम के जयकारों के मध्य जलाभिषेक किया गया।

आध्यात्मिक बाल मंडल पाठशाला के बच्चों ने लिया चातुर्मास संकल्प

अनोखा तीर, बनखेड़ी। श्री 1008 वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में आध्यात्मिक बाल मंडल पाठशाला के बच्चों ने चतुर्मास के नियम का संकल्प लिया। जिसमें 16 बच्चों ने लिया संयम से रहने का संकल्प, नियम में रात्रि भोजन का त्याग, बाजार में बनीं खाद्य वस्तुओं का त्याग, जमीकंद का त्याग, पानी छान कर पीना इन नियमों का पालन चार माह बच्चों द्वारा किया जाएगा। पाठशाला की संचालिका मंजुषा जैन ने बताया कि बच्चों द्वारा संयम धर्म की सकल दिगम्बर जैन समाज बनखेड़ी ने अनुमोदना की और चर्तुमास समापन पर समाज द्वारा सभी बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए पुरस्कृत किया जाएगा।

कालोनाईजर शर्मा पर जमीनी विवाद के लेनदेन पर चली गोली

- दो आरोपी पुलिस गिरफ्त में, एक फरार

अनोखा तीर, नर्मदापुरम।

पुलिस अधीक्षक गुरुकरन सिंह एवं एएसपी अवधेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में अनुविभागीय अधिकारी पुलिस पराग सैनी के निर्देशन में कोतवाली पुलिस द्वारा 16 जुलाई को हुए गोलीकांड के 02 आरोपियों को महज 48 घंटे के भीतर गिरफ्तार करने में सफल हुई है। जानकारी देते हुए कोतवाली थाना प्रभारी संतोष सिंह चौहान ने बताया कि 16 जुलाई को थाने पर सूचना प्राप्त हुई कि किन्ही व्यक्तियों द्वारा अजय शर्मा को वुडस इन होटल सदर बाजार के सामने गोली मार दी है।

सूचना पर तस्दीक हेतु पुलिस बल को रवाना किया गया। सूचना सही पाये जाने पर थाना कोतवाली नर्मदापुरम में अपराध क्रमांक 0461/22 धारा 307, 34 भादवि का आरोपी शिवम तिवारी उर्फ शुभम एवं अन्य 02 साथियों के विरुद्ध पंजीबध्द किया जाकर विवेचना में लिया। दौराने विवेचना साक्ष्य संकलन कर आरोपीगणों की पता तलाश करने हेतु थाना कोतवाली से पुलिस टीमें रवाना की गई। पुलिस टीम द्वारा कड़ी मशक्कत कर विश्वनीय मुखबिर की सूचना पर 02 आरोपियों शिवम उर्फ शुभम पिता धनश्याम तिवारी निवासी गिन्नी कम्पाउड, मीनाक्षी चौक, हरीश पिता हरिकिशन गौर निवासी चक्कर रोड, नर्मदापुरम को बाबई रोड पुराने टोल नाके से नाकाबंदी व घेराबंदी कर पकड़ने में सफलता प्राप्त की।

पूछताछ के घटना में प्रयुक्त सफेद रंग की होंडा अमेज कार जप्त की गई है व आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया। प्रकरण में 01 अन्य आरोपी की गिरफ्तारी हेतु प्रयास जारी है। संपूर्ण कार्यवाही में निरीक्षक सुरेश फरकले, उपनिरीक्षक सुनील ठाकुर, दरबारीलाल विश्वकर्मा, प्रवीण यादव, हेमंत निशोद, केपी गौर सीसीटीव्ही, सउनि लक्ष्मण अमोल्या, वीरेन्द्र शुक्ला, दिनेश मेहरा, कुंवर सिंह, प्रधान आरक्षक अजब सिंह, शैलेन्द्र वर्मा, विशाल भदौरिया, अमित शर्मा, आरक्षक आशीष शर्मा, सरोज मजोका, शंकर धुर्वे, संतोष टेकाम, कपिल, लोकेट जाट, राजेश चौहान एवं दुर्गेश सोनी, भगवत आरक्षक संदीप यदुवंशी, अभिषेक, प्रशांत, मुकेश जैन, वैभव श्रीवास्तव की मुख्य भूमिका रही।

साप्ताहिक बाजार में मुख्य द्वार पर गड्ढा होने से फंस रहे वाहन

अनोखा तीर, सेमरी हरचंद।

नगर के साप्ताहिक बाजार के मुख्य द्वार स्टेट हाईवे के पास नाले पर सीमेंट, गिट्टी से लोहे का जाल बिछाकर नाले को ढका गया था, जो अब बीच से टूट चुका है। आए दिन यहां दोपहिया और चार पहिया वाहन फस जाते हैं। अंधेरी रात में कई बार बाइक से जा रहे लोग गड्ढे में गिर जाते हैं। कई

लोगों द्वारा बताया गया कि कई बार इसकी शिकायत मौखिक तौर पर ग्राम पंचायत कार्यालय में सचिव को की गई है। लेकिन इसके बाद भी इस बंदे की मरम्मत नहीं कराई जा रही है। जिससे कई दुर्घटनाएं नगर में आए दिन सामने आती हैं। ऐसा ही कुछ विगत 2 दिन पहले देखने को मिल यहां एक बोलेरो कार नाले में फंस गई। जिसे बमुश्किल 5 लोगों की सहायता से बाहर निकाला गया। यह कोई पहली बार नहीं है जब यहां वाहन फंस जाते हैं। यह घटना यहां आए दिन देखने को मिलती है।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला जल एवं स्वच्छता मिशन की बैठक आयोजित

अनोखा तीर, नर्मदापुरम। कलेक्टर नर्मदापुरम नीरज कुमार सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में जिला जल एवं स्वच्छता मिशन की बैठक आयोजित हुई। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने ब्लॉकवार रेट्रोफिटिंग एवं नवीन नल जल योजनाओं की विस्तार से समीक्षा की। कलेक्टर श्री सिंह ने सभी अनुविभागीय अधिकारी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को सख्त निर्देश दिए कि प्रगतिरत नल जल योजनाओं को तेजी से पूर्ण किया जाए। निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। जिला जल एवं स्वच्छता मिशन समिता के अनुमोदन के बाद ही संबंधित कांट्रेक्टर को अंतिम देयको का भुगतान किया जाए। कलेक्टर श्री सिंह ने सभी एसडीओ पीएचई को निर्देश दिए कि वे अपने क्षेत्र की लंबित नल जल योजनाओं की डीपीआर अनिवार्य रूप से 31 जुलाई तक बनाया जाना सुनिश्चित करें। वनग्रामों को भी नल जल योजनाओं से जोड़े। उन्होंने जिले के 40 विभिन्न ग्रामों के नल जल योजनाओं की डीपीआर अप्रुव कर स्वीकृति हेतु वरिष्ठ कार्यालय भेजने के निर्देश दिए। बैठक में कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग एसके गुप्ता ने बताया कि जिले में अभी तक 77 ग्रामों की रेट्रो फिटिंग एवं नल जल योजनाओं का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। शेष नल जल योजनाओं का कार्य निरंतर जारी है। बैठक में जिला पंचायत सीईओ मनोज सरियाम, कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग एसके गुप्ता सहित सभी अनुविभागीय अधिकारी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग उपस्थित रहे।

प्रत्याशी कर रहे जीत के दावे

कौन बनेगा नगर सरकार का मुखिया, लग रहे हैं कई कयास

अनोखा तीर, सिवनी मालवा।

स्थानीय शासकीय कन्या शाला में बुधवार को ईवीएम मशीन से गिनती शुरू होगी। प्रशासन के द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की गई हैं। राजनीतिक दलों के नुमाइंदों के सियासी थकान उतरने के बाद जनप्रतिनिधि शहर के नागरिकों की नब्ज टटोलने निकले, तो जितने मुंह उतनी बातें सुनने को मिली। कोई किसी से बुराई लेने को तैयार नहीं है। नेता जिससे मुखातिब होते हैं तो उनकी और पार्टी की शान में तारीफ करते नजर आते हैं। नेताजी खुश हो जाते। 13 जुलाई मतदान के बाद से नगर में यही चल रहा है। यह किसी एक दल के साथ नहीं हो रहा लोग अब सर देख भाजपा, कांग्रेस, निर्दलीय को विजय बना रहे हैं। दोनों दलों के नेता अपनी जीत के दावे कर रहे हैं। मतदान के प्रतिशत को देखते हुए नगर में अटकलें लगाई जाने लगी है। जिन क्षेत्रों में भाजपा का दबदबा था वहां कांग्रेस भारी लग रही है। क्षेत्र में मतदान प्रतिशत इस बार अच्छा रहा है। जानकार बता रहे हैं कि चुनाव में नतीजे चौंकाने वाले सामने आ सकते हैं। मतदाताओं ने दोनों दलों के साथ निर्दलीय उम्मीदवारों पर भी मतों की बौछार की है। ऐसे में विजय और शिकस्त का अंदाजा लगाना सियासी माहिरों को मुश्किल नजर आ रहा है। कांग्रेस के नेता एवं भाजपा के नेता दोनों ही दल के नेता अपनी-अपनी जीत सुनिश्चित बता रहे हैं। देखना तो अब दिलचस्प होगा कि नगर सरकार का मुखिया कौन होगा। अब जीत-हार के कयास लगाने में जुटे मतदाता और नेता।

मतगणना की तैयारियां पूर्ण, रिटर्निंग अधिकारी ने किया निरीक्षण

अनोखा तीर, सिवनी मालवा। नगर पालिका निर्वाचन 2022 पार्षद पद के लिए मतगणना की संपूर्ण तैयारियां कर ली गई है। मतगणना प्रातः 9 बजे से शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिवनी मालवा में होगी। रिटर्निंग अधिकारी अनिल कुमार जैन तथा सहायक रिटर्निंग अधिकारी नगर पालिका पुष्पेंद्र निगम द्वारा मतगणना स्थल का निरीक्षण एवं तैयारियां की जानकारी ली गई। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मतगणना स्थल पर मतगणना हाल, उद्घोषणा कक्ष, आईटी सेंटर, टेबुलेशन कक्ष, प्रेक्षक एवं दूरभाष कक्ष उद्घोषणा स्थल, मीडिया कक्ष, मेडिकल सुविधा केंद्र, पुलिस कंट्रोल एवं सुरक्षा बल के लिए पृथक-पृथक बनाए गए हैं। मतगणना परिसर में बिना पहचान प्रवेश निषेध किया गया है।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप

- पीड़िता ने एसपी से लगाई न्याय की गुहार

अनोखा तीर, बैतूल।

कोतवाली थाना क्षेत्र में दुष्कर्म का एक मामला सामने आया है। इसमें पीड़िता ने दुष्कर्मी के खिलाफ शादी का झांसा देकर लगातार दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। गौरतलब है कि इस मामले में विगत 21 जनवरी को कोतवाली थाने में शिकायत की गई थी। पीड़िता ने एसपी को भी आवेदन सौंपकर शिकायत की थी लेकिन इस मामले में अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं होने के चलते पीड़िता ने पुलिस अधीक्षक से न्याय की गुहार लगाई है।

पीड़िता हमलापुर क्षेत्र में रहती है। पीड़िता का आरोप है कि ग्राम कढ़ाई निवासी छत्रपाल पिता कुंजीलाल मर्सकोले द्वारा उसके साथ शादी का झांसा देकर दुराचार किया गया है। पीड़िता के अनुसार अनावेदक छत्रपाल जनपद पंचायत बैतूल में कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर पदस्थ है, शादी के अलावा शासकीय नौकरी का प्रलोभन देकर उसने पीड़िता के साथ दुराचार किया है। पीड़िता ने बताया कि उन्होंने कई बार छत्रपाल को फोन पर शादी करने के लिए कहा। लेकिन छत्रपाल हमेशा टाला मटोली करते रहा फोन करने पर छत्रपाल पीड़िता को जान से मारने की धमकी देकर गाली-गलौज करने लगा। इस मामले में पीड़िता ने दुष्कर्मी छत्रपाल के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

नंदवाड़ा के ग्रामीण चार दिन से अंधेरे में, विद्युत डीई को सौंपा ज्ञापन

अनोखा तीर, पिपरिया। नगर के समीपस्थ ग्राम नंदवाड़ा के ग्रामीण चार दिन से अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। विद्युत विभाग के अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी सुनवाई नहीं हुई। ग्राम के नवनियुक्त सरपंच पति सुरेश पटेल ने बताया कि करीब चार माह पहले से हमारे ग्राम की डीपी जली पड़ी है। हमने इसकी मौखिक शिकायत विद्युत विभाग के शुभम पटेल सहित लाईनमेन से की। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। वहीं ग्रामीण बारिश के चलते अंधेरे में रहने को मजबूर हो रहे हैं। बारिश के मौसम में जहरीले कीट निकलते हैं अगर किसी को कुछ हो गया तो इसका जबाबदार कौन होगा। उन्होंने यह भी बताया कि हम सभी ग्रामीण पीने के पानी तक को तरस रहे हैं। दूर से पीने के लिए पानी लाना पड़ रहा है। जब हमारी सुनवाई नहीं हुई तो हम सभी ग्रामीणों ने एकत्रित होकर विद्युत विभाग के डीई को लिखित ज्ञापन सौंपकर जल्द से जल्द हमारे ग्राम नंदवाड़ा की दो डीपी, तीन टूटे खंबे व जली हुई केवल लाईन को बदलने व दोनो डीपी हमारे ग्राम की लाईन से चाले करवाने हेतु सौंपा है। जो कि तीन माह पहले खेत की लाईट से चल रही थी जिसके कारण नल जल योजना के द्वारा बनाई गई पानी की टंकी भी नहीं भरा पा रही थी। इस दौरान सुरेश पटेल, गोलू यादव, बंटी, वीरसिंह, पप्पू, उमाशंकर सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जयंती पर

यूथ महापंचायत के लिए 6 प्रतिभागी चयनित

अनोखा तीर, नर्मदापुरम।

महान क्रांतिकारी अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जयंती पर यूथ महापंचायत का जिला स्तरीय आयोजन शासकीय होम साइंस कॉलेज में किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. कामिनी जैन, नर्मदा महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. राघवेंद्र बोहरे, प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय इटारसी डॉ. मुकेश झोटे, जिला क्रीड़ा अधिकारी उमा पटेल, जन अभियान परिषद के महेन्द्र पचलानिया, राजेश सिसोदिया, डॉ. अरुण सिकरवार कार्यक्रम संयोजक, डॉ. हर्षा चचाने, डॉ. कंचन ठाकुर, डॉ. रागिनी सिकरवार, डॉ. रीना मालवीय उपस्थित रहे। यूथ महापंचायत में 15 से 29 वर्ष के युवा प्रतिभागी शामिल हुए। यूथ-पंचायत में सम्मिलित प्रतिभागियों में से 18 उत्कृष्ट प्रतिभागियों का चयन भोपाल में 23 व 24 जुलाई

2022 को आयोजित राज्य स्तरीय यूथ महापंचायत के लिए किया गया। चयनित प्रतिभागी राज्य स्तर पर अपने जिले का युवा प्रतिनिधि के रूप में प्रतिनिधित्व करेंगे। उत्कृष्ट प्रतिभागियों के अंशिका गुप्ता, आदित्य परसाई, ओम सिंह, मुस्कान चौरसिया, राधिका यादव, पूजा मालवीय रहें। प्रतीक्षा सूची में निशिता जवर, राखी सराठे, शांभवी गौर, कोईना जैन ने स्थान बनाया।

कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए डॉ. श्रुति गोखले में अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की जीवन एवं बलिदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. पुष्पा दुबे, डॉ. संगीता पारे, डॉ. दशरथ मीणा, डॉ. मनीषा तिवारी, डॉ. विजय देवासकर, डॉ. एकता गुप्ता, डॉ. कीर्ति दीक्षित, डॉ. नीतू पवार, डॉ. निशा रिछारिया, आभा बाधवा, अंकिता तिवारी, श्वेता वर्मा, डॉ. मनीष चंद्र चौधरी, डॉ. आशीष सौहगोरा, दुर्गेश, डॉ. अनिल रजक, डॉ. रफीक अली, डॉ. मधु विजय, अजय तिवारी, डॉ. हेमंत चौधरी, प्रीति ठाकुर एवं भारी संख्या में छात्राएं उपस्थित रही।

त्वरित टिप्पणी
रितेश त्यागी

गहन मंथन योग्य चुनाव के परिणाम

प्रदेश में देर सबेर आखिर नगरीय निकाय चुनाव संपन्न हो गए और उसके नतीजे भी सामने आने लगे हैं। प्रदेश स्तर की बात करें तो पहले चरण के नतीजो के बाद प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा सभी जगह भाजपामय की बात कह रही है। वहीं मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस में भी उत्साह देखने को मिल रहा है। हालांकि कई जिलों में कांग्रेस की करारी हार हुई है। जबकि कुछ जिलों में अपेक्षा से ज्यादा बढ़त मिली है। देखा जाए तो इन नतीजों में दोनों ही प्रमुख दलों के लिए संदेश छिपा हुआ है। जिस पर गहराई से मंथन किए जाने की जरूरत महसूस हो रही है। नगरीय निकाय चुनाव के परिणाम के बाद हरदा में भी कुछ ऐसा ही आभास हो रहा है। यहां भाजपा ने चारों नगरीय निकाय में जीत दर्ज की है। नवगठित सिराली नगर परिषद की जनता ने यहां की बागडोर भाजपा को सौंपने दिलचस्पी दिखाई है। प्रथम नप चुनाव दौरान जनता में खासा उत्साह देखने को मिला। जबकि कांगेस और भाजपा ने यहां की अपेक्षा हरदा, खिरकिया और टिमरनी में ज्यादा ध्यान रखा। वजह कुछ भी रही हो, लेकिन यहां खासी चुनावी चहलपहल दिखी। खासकर भाजपा पूरी ताकत से वार्डो में सक्रिय नजर आई। नगर सरकार के गठन में जनता ने हरदा नगर पालिका में भाजपा पर विश्वास कायम रखा। उसे पूर्ण बहुमत दिया, किन्तु शहर की जनता ने विपक्ष को भी थोड़ा मजबूत किया है। पिछली परिषद में जहां कांग्रेस के महज 4

पार्षद परिषद में पहुंचे थे। वहीं इस बार संख्या दो अंकों में यानि 10 हो गई है। जो परिषद में कांग्रेस की आवाज को ताकत दे सकेंगे। बशर्त, कांग्रेस एकजुटता का संदेश दे पाए। तभी राजनीतिक जमावट कर पाएगी। यहां यह भी मंथन करने योग्य है कि जब जनता ने 35 में से 10 वार्डो में उनके प्रत्याशियों को जिताया हैं तो यही आंकडा15 से 18 तक भी पहुंच सकता था। प्रत्याशी चयन में क्या कमी रह गई ? अधिकांश वार्डो में कार्यकर्ताओं का टोटा, मतदाताओं से सीधे संवाद की कमी समेत अन्य पहलुओं पर समीक्षा की आवश्यकता है। साथ ही जिन वार्डो में पार्टी को प्रतिनिधित्व मिला है, वहां के लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना एक बड़ी चुनौती है। विकासशील सोच व समन्वय यहां उनके काम आएंगे। इधर, भाजपा को हरदा समेत सभी चार निकायों में बहुमत मिला है। किन्तु हरदा का गणित समीक्षात्मक है। भाजपा के गढ़ माने जाने वाले वार्ड उसी की झोली में रहे। जबकि वार्ड क्रमांक 12, 15, 20 और 25 जैसे वार्ड उसके हाथ से खिसक गए हैं। हालांकि ये वार्ड भाजपा के गढ़ नही हैं। यहां अन्य दल भी प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। इस उतार-चढ़ाव को समझने में भाजपा को ज्यादा समय नही लगेगा। जानकारों की माने तो इस मामले में भाजपा मुख्य विपक्षी दल से कई कदम आगे हैं। बावजूद चुनावी परिणामों पर समीक्षा बेहद जरूरी है। प्रत्याशी चयन, मैदानी रणनीति, प्रभारियों की भूमिका समेत अन्य बिन्दू शामिल हैं। साथ ही जिन 5 वार्डो में भाजपा को करीब साढ़े 4 हजार वोट से जीत मिली है, उसे यथावत रखना निरंतर सक्रियता और अपेक्षाकृत विकास कार्यो पर निर्भर है। दरअसल, नपा चुनाव के बाद जो गणित सामने आया है, वह गहन मंथन योग्य माना जा रहा है। वह इसलिए, क्योंकि नपा चुनाव के परिणाम और विधानसभा चुनाव के बीच अब ज्यादा समय नही बचा है।

ट्रेन से हो रही थी गांजे की तस्करी

तीन महिलाओं समेत पांच आरोपियों से पौने 4 लाख का गांजा जब्त

अनोखा तीर, बैतूल।

जीआरपी आमला द्वारा ट्रेनों में अवैध गांजा के परिवहन की रोकथाम एवं पतारसी के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों की धरपकड़ हेतु बेहद सघनता के साथ ट्रेन एवं स्टेशन पर चेकिंग के लिए जीआरपी पुलिस पूरी मुस्तैदी से कोशिश कर रही है। इस अनुक्रम में थाना हाजा के धारा 8/20 एनडीपीएस में आरोपिया मंदाकिनी खान, नीलम संकत कुचबंदिया, पुजा कुचबंदिया, शेरा ठाकुर एवं विजय चौहान को 18 जुलाई 2022 को गिरफ्तार कर उनसे अवैध गांजा जप्त करने में आमला पुलिस को सफलता मिली है। जीआरपी ने बताया कि ट्रेन क्रमांक 12721 दक्षिण एक्सप्रेस आमला स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 3 पर आई थी। उसे थाना प्रभारी आमला एएसआई सुनील कैथवास द्वारा हमराह स्टाफ के चेक किया गया। चेकिंग के दौरान जनरल कोच में तीन महिला एवं 2 पुरुष मिले, जिनके पास दो छोटे बच्चे थे। वे पुलिस को देखकर नजरें छुपा रहे थे, घबरा रहे थे। स्वयं को छुपाने का प्रयास कर रहे थे। संदेह होने पर सभी को स्टाफ की मदद से ट्रेन से उतारकर पूछताछ की। उनके पास के बैग एवं ट्राली सुटकेश खुलवा कर चेक किए। बैगों में बड़े-बड़े एक-एक पैकेट क्रीम रंग के टेप से पैक किए हुए मिले। जिनके बारे में पूछताछ पर पैकेटों मे गांजा होना और उड़ीसा से खरीदकर भोपाल में बेचने हेतु ले जाना बताया। आरोपियों का कृत्य धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का पाया जाने से विधिवत मौके की कार्यवाही कर आरोपियों को मय जप्ती माल के थाना जीआरपी आमला लाकर अपराध पंजीबद्ध कर न्यायालय बैतूल में पेश किया गया। जप्तसुदा माल सुरक्षा के साथ एएसआई (एम) को मालखाना में सुरक्षित रखने हेतु सुपुर्द किया गया है।

इनकी की गई गिरफ्तारी

मंदाकिनी पति रिंकू खान उम्र 28 साल निवासी शिवपुरी, हाल मुन्नी बाजी के किराये के मकान में फूटा मकबरा के पास विशाल शादी हाल के पीछे, छोला रोड, थाना हनुमान गंज, जिला भोपाल। नीलम संकत पति आकाश कुचबंदिया उम्र 22 साल निवासी मनियर मोहल्ला हरिचन्द की किराना दुकान के पास बुलाखे का घर शिवपुरी, हाल विशाल शादी के हाल के पीछे मुन्ना तेल वाले के मकान में फूटा मकबरा थाना हनुमानगंज भोपाल। पूजा पिता फूल सिंह कुचबंदिया उम्र 25 साल निवासी कन्नौद रोड जावर जोड़ के पास आष्टा जिला देवास। शेरा ठाकुर पिता स्व. देवी सिंह ठाकुर उम्र 23 साल निवासी सुरभी काम्प्लेक्स के पास नगर निगम कालोनी वार्ड नं 12 नारियल खेड़ा भोपाल। विजय पिता स्व. दिलीप चौहान उम्र 25 साल निवासी 7 दुकान बाबा ढाबा के पास आरिफ नगर मोहल्ला झुग्गी झोपड़ी में रोड के पास नाले के बाजू में आरिफ नगर मोहल्ला भोपाल।

रात भर बरसा पानी...

आधा मीटर बढ़ा नर्मदा का जलस्तर, लेवल 267 मीटर

ऊपरी इलाकों के साथ-साथ जिले में लगातार बारिश का दौर जारी है। जिस वजह से तवा डेम में पानी का लेवल बढ़ गया है। जिसके चलते तवा डेम के 13 गेट खोलने पड़े। जिसका असर नर्मदा क्षेत्र के निचले इलाकों में देखने को मिल रहा है। वहीं दूसरी ओर जिला प्रशासन हर स्थिति से निपटने पूरी तरह तैयार है। संभावित इलाकों के अलावा कई गांवों को चिन्हित कर वहां अलर्ट जारी कर दिया है। वहीं मैदानी अमला सतत निगरानी में जुटा हुआ है।

● नदी-नालों में बाढ़ के कारण कई रास्ते बंद ● कलेक्टर-एसपी ने प्रभावित क्षेत्रों को देखा

अनोखा तीर, हरदा।

क्षेत्र में बारिश का दौर थमने का नाम नही ले रहा है। करीब एक पखवाड़े से पानी लगातार बरस रहा है। इस बीच मुख्यालय स्थित अजनाल नदी समेत कई नदियां 3 बार उफान पर आ चुकी हैं, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त है। वहीं नदी-नालों में बाढ़ के चलते कई मार्गो पर पुल-पुलिया पानी में डूब गए। जिसके कारण आवागमन बाधित हुआ। ऐसे में लोगों को लंबा फेर लगाकर अपने गंतव्य को पहुंचना पड़ा। अधीक्षक भू-अभिलेख से मिली जानकारी के अनुसार पिछले 24 घंटे दौरान जिले में 25.1 मिमी वर्षा दर्ज की है। पिछले साल 19 जुलाई तक 245 मिमी बारिश हुई थी, जबकि इस साल 724 मिमी वर्षा हो चुकी है। जो पिछले की तुलना में ढाई गुना ज्यादा है। इधर, तवा डेम के गेट खोले जाने तथा लगातार बारिश के कारण नर्मदा का जलस्तर 24 घंटे में करीब एक मीटर बढ़ गया है। एक दिन पहले यानि सोमवार शाम 6 बजे तक नर्मदा का जलस्तर 266.800 था, वहीं दूसरे मंगलवार शाम तक एक मीटर बढ़कर 267.110 पहुंच गया है। वहीं प्राकृतिक आपदाओं को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह सचेत है। प्रशासन का दावा है कि राहत व बचाव दल हर स्थिति से निपटने तैयार है। इसके लिए शहर में संभावित इलाकों के साथ-साथ कई चिन्हित गांवों में अलर्ट जारी किया है। वहीं मैदानी अमला सतत निगरानी में रखे हुए है।

वर्षा की स्थिति ....

24 घंटे में कुल वर्षा	-- 25.1 मि.मी.
हरदा तहसील	-- 16.5 मि.मी.
टिमरनी तहसील	-- 34.6 मि.मी.
खिरकिया तहसील	-- 24.2 मि.मी.
अब तक कुल बारिश	-- 724.1 मि.मी.
हरदा तहसील	-- 717.7 मि.मी.
टिमरनी तहसील	-- 965.0 मि.मी.
खिरकिया तहसील	-- 489.6 मि.मी.
पिछले साल अब तक	-- 245.1 मि.मी.
हरदा तहसील	-- 317.4 मि.मी.
टिमरनी तहसील	-- 276.1 मि.मी.
खिरकिया तहसील	-- 141.8 मि.मी.

पुलियाओं की जल्द करें मरम्मत : कलेक्टर

कलेक्टर ऋषि गर्ग एवं पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार अग्रवाल ने मंगलवार को अतिवर्षा से प्रभावित इलाकों का भ्रमण किया। वहीं क्षतिग्रस्त पुल-पुलियाओं को देखा। इस दौरान खिरकिया एसडीएम महेश बमन्हा भी मौजूद थे। जानकारी के अनुसार अधिकारियों ने ग्राम मांदला, दीपगांव और मुहाल का दौरा कर वहां अतिवृष्टि के कारण क्षतिग्रस्त सड़क व पुल पुलियाओं का जायजा लिया। इस मौके पर कलेक्टर श्री गर्ग ने सड़क विकास निगम के अधिकारियों को अतिशीघ्र पुलिया की मरम्मत कराने के निर्देश दिए। साथ ही पुलिया के दोनों तरफ स्टॉपर व रिफ्लेक्टर लगाने के लिए पाबंद किया।

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करें : एसपी

इस दौरान पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार अग्रवाल ने खिरकिया एसडीओपी को निर्देशित किया कि मुहाल तथा मांदला की क्षतिग्रस्त पुलिया के दोनों ओर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएं। दोनों तरफ बेरिकेट लगाकर यातायात नियंत्रण की बात भी कही। ताकि दुर्घटना की कोई आंशका ना रहे। पुलिस धीक्षक श्री अग्रवाल ने दिन और रात दोनों समय क्षतिग्रस्त पुलिया के आसपास जवानों की तैनाती के निर्देश दिए। साथ ही पुलिस जवान तथा ग्राम रक्षा समिति के सदस्यों की मदद से प्रभावित स्थलों पर यातायात व्यवस्था बनाए रखें।

उत्कृष्ट विद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम संपन्न

अनोखा तीर, हरदा।

मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश व अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदा पीसी गुप्ता के मार्गदर्शन में वृहद वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत डॉ. भीमराव अम्बेडकर उत्कृष्ट विद्यालय हरदा में मंगलवार को पौधरोपण किया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री प्रदीप राठौर ने इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को बताया गया कि पेड़ प्रकृति की अनुपम देन एवं बहुमूल्य संपदा होते है, जहां पर पेड़ अधिक मात्रा में होते हैं वहां की जलवायु साफ व स्वच्छ होती है।

अतः इनकी रक्षा करना हमारा परम दायित्व है। जब तक पृथ्वी पर पेड़ों का अस्तित्व है तब तक ही मानव सभ्यता का भी अस्तित्व है। इसलिए हमें पेड़ो की सुरक्षा करनी होगी। इस तरह के कार्यक्रम केवल पौधों को रोपित करने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि पौधों को वृक्ष बनने तक की उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी हमें लेनी चाहिए। श्री राठौर ने छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि वह अपने घर आगंन में भी एक-एक पौधा अवश्य लगाएं, जिससे आए दिन बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण का संतुलन सही किया जा सके। विद्यालय के छात्र-छात्राओं, व शिक्षकों ने एक-एक पौधा लगाकर उनका पालन पोषण करने का संकल्प लिया। इस दौरान जिला विधिक सहायता अधिकारी अपर्णा लोधी, विद्यालय के प्राचार्य जेपी सोनी, उप प्राचार्य संतोष यादव, शिक्षणगण, विद्यार्थीगण द्वारा कई औषधीय एवं फलदार पौधे जैसे नींबू, जामुन, बेलपत्र, आम, सीताफल, अमरूद इत्यादि पौधों को रोपित किया गया।

जनपद पंचायत अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष निर्वाचन के लिए कार्यक्रम निर्धारित

अनोखा तीर, हरदा।

त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन के तहत जनपद पंचायत अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। जारी कार्यक्रम के अनुसार हरदा एवं टिमरनी जनपद में 27 जुलाई बुधवार को तथा खिरकिया में 28 जुलाई गुरुवार को निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न होगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ऋषि गर्ग ने बताया कि जनपद पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने का समय प्रातः 10 बजे से प्रातः 10:30 बजे तक निर्धारित किया गया है। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 11 बजे तक कर ली जाएगी तथा नाम वापसी की कार्यवाही 11:30 बजे तक की जाएगी। मत पत्र तैयार करने का कार्य दोपहर 12:30 तक पूर्ण करना है तथा दोपहर 12:30 से 1 बजे तक मतदान तथा 1:30 बजे तक मतगणना व परिणाम की घोषणा की जाना है।

जनपद उपाध्यक्ष निर्वाचन का कार्यक्रम- जनपद उपाध्यक्ष निर्वाचन के लिए जारी कार्यक्रम के अनुसार हरदा एवं टिमरनी जनपद में 27 जुलाई बुधवार को तथा खिरकिया में 28 जुलाई गुरूवार को निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न होगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री गर्ग ने बताया कि जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष पद के लिए नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने का समय प्रातः 2 बजे से प्रातः 2:30 बजे तक निर्धारित किया गया है। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 3 बजे तक कर ली जाएगी तथा नाम वापसी की कार्यवाही 3:30 बजे तक की जाएगी। मत पत्र तैयार करने का कार्य दोपहर 4:30 तक पूर्ण करना है तथा दोपहर 4:30 से 5 बजे तक मतदान तथा 5 बजे से मतगणना व परिणाम की घोषणा की जाना है।

निर्वाचन हेतु पीठासीन अधिकारी नियुक्त

अनोखा तीर, हरदा। जिले की तीनों जनपद पंचायतों में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ऋषि गर्ग ने पीठासीन अधिकारी एवं सहायक अधिकारी की नियुक्ति की है। जारी आदेश अनुसार 27 जुलाई को जनपद अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के लिए होने वाले निर्वाचन के लिए हरदा विकासखण्ड के लिए पीठासीन अधिकारी एसडीएम हरदा श्रुति अग्रवाल को बनाया गया है। इनके सहायक अधिकारी के रूप में जनपद हरदा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी बलवानसिंह मवासे की नियुक्ति की गई है। इसी तरह टिमरनी विकासखण्ड के लिए पीठासीन अधिकारी एसडीएम टिमरनी महेश कुमार बड़ोले को बनाया गया है। इनके सहायक अधिकारी के रूप में जनपद टिमरनी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अशोक उइके की नियुक्ति की गई है, जबकि 28 जुलाई को विकासखण्ड खिरकिया में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष निर्वाचन के लिए पीठासीन अधिकारी एसडीएम खिरकिया महेश बमन्हा को बनाया गया है।

अमृत महोत्सव

18 से अधिक आयु के युवाओं को निःशुल्क लगेंगे प्रिकॉशन डोज

अनोखा तीर, हरदा। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कोविड वैक्सीन अमृत महोत्सव भी मनाया जा रहा है। इस दौरान 18 वर्ष से अधिक आयु के युवाओं को कोविड वैक्सीन का प्रिकॉशन डोज अब निःशुल्क लगाया जाना है। इस कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ 21 जुलाई को किया जाएगा। जिन युवाओं ने कोविड वैक्सीन के दो डोज लगवा लिए हैं तथा उन्हें 6 माह की अवधि पूर्ण हो चुकी है, ऐसे युवा प्रिकॉशन डोज के लिए पात्र होंगे। जिन्हें दो डोज कोवैक्सीन के लग चुके है, उन्हें प्रिकॉशन डोज में भी कोवैक्सीन ही लगाई जाएगी।

इसी तरह जिन्हें दो डोज कोविशील्ड के लग चुके है, उन्हें प्रिकॉशन डोज में भी कोविशील्ड ही लगाई जाएगी। कोविड अमृत महोत्सव के दौरान 27 जुलाई, 3 अगस्त, 17 अगस्त, 31 अगस्त, 14 सितम्बर व 28 सितम्बर को वैक्सीनेशन महाभियान आयोजित किया जाएगा। इस दौरान निजी व शासकीय कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड पर विशेष टीकाकरण कैम्प लगाए जायेंगे तथा टीकाकृत व्यक्तियों को टीकाकरण प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए जाएंगे।

जिपं अध्यक्ष, उपाध्यक्ष निर्वाचन हेतु पीठासीन अधिकारी नियुक्त

अनोखा तीर, हरदा। जिला पंचायत अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ऋषि गर्ग को पीठासीन अधिकारी नियुक्त किया गया है। इनके सहायक अधिकारी के रूप में डिप्टी कलेक्टर श्रुति अग्रवाल तथा जिला शिक्षा अधिकारी एलएन प्रजापति की नियुक्ति की गई है।